अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

वीर निर्वाण संवत् - 2537

पौष कृष्ण पक्ष वि.सं. 2067 दिसम्बर 2010

वर्ष : चार

अंक : चौदह

मूल्य : 10/-

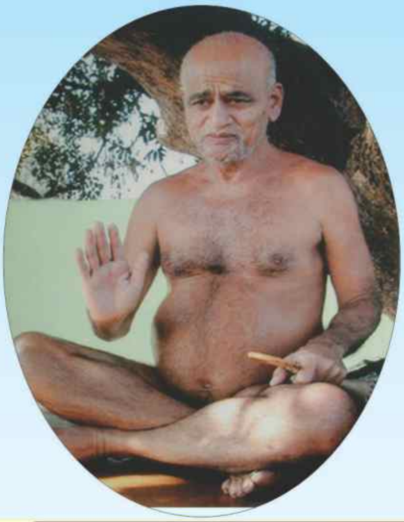

चरण पीर

पथ और पाथेय का
परिचय क्या दूँ
प्राय: परिचित हैं
नियम से जो
आदेय दिखाते,
पथ अभी
भले ही दूर हो अपरिमित..!
परवाह नहीं

किन्तु
कहीं ऐसा न हो
कि
आस्था के गवाक्ष में से
गन्तव्य दिख जाने से
इसके
तरुण चरणों की
पीर कम पड़ जाय।

साभार-चेतना के गहराव में

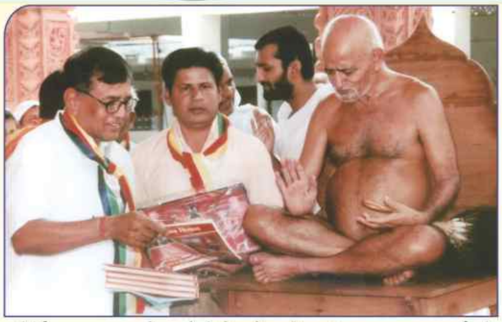

कीर्तिनगर, जयपुर के कमेटी के लोग बीनाबारंह जाकर आचार्य श्री के चरणों में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के कार्यक्रम की प्रभावना के बारे में अवगत कराकरआशीर्वाद लेते हुए।

मुनिश्री द्वारा लिखित भावना को दर्शाते हुये समाज के अध्यक्ष श्री महावीर कासलीवाल, दि. जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

19 जनवरी से 19 फरवरी	- षोडशकारण व्रत	01 मार्च	- भ. मुनिसुव्रतनाथ मोक्षकल्याणक
01 फरवरी	- भ. आदिनाथ मोक्षकल्याणक	10 मार्च	- भ. मल्लिनाथ मोक्षकल्याणक
08 फरवरी से 17 फरवरी	- दशलक्षण व्रत	12 मार्च	- भ. चन्द्रप्रभ मोक्षकल्याणक
16 फरवरी से 18 फरवरी	- रत्नत्रय व्रत	12 मार्च से 19 मार्च	- अष्टान्हिका व्रत
21 फरवरी	- भ. पद्मप्रभु मोक्षकल्याणक	18 मार्च से	- षोडशकारण व्रत प्रारंभ
24 फरवरी	- भ. सुपार्श्वनाथ मोक्षकल्याणक		

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	**अरविन्द जैन, पथरिया**	**इंजी. महेन्द्र जैन**	**राजेश जैन 'रज्जन'**	**डॉ सुधीर जैन**
94256 01161	दमोह		दमोह	9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य **मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।**

● *परामर्शदाता* ●

डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179

पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●

श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंध सम्पादक* ●

डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
F-108/34, शिवाजी नगर, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●

डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●

पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-चार
अंक-चौदह

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. **वर्तमान महावीर** — 2
   ''सम्पादकीय'' — श्रीपाल जैन 'दिवा'
2. **संयोग और वियोग से परे है ध्यान** — 4
   मुनि आर्जवसागर
3. **आधुनिक विज्ञान की चुनौतियाँ और जैनागम** — 8
   प्रो. एल.सी. जैन
4. **गणितसार संग्रह** — 10
5. **क्या सोने चाँदी के वर्क का उपयोग वेदियों अथवा देवालयों में करना धर्म संगत है ?** — 12
   आशुतोष कुमार जैन
6. **आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव** — 14
   डॉ. अजित कुमार जैन
7. **विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका** — 16
   कु. आराधना जैन
8. **सम्यक ध्यान शतक** — 18
   मुनि आर्जवसागर
9. **जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा** — 19
   डॉ. संजय जैन
10. **स्वास्थ्यप्रद आहार-अहिंसक आहार** — 22
    डॉ. बी.एल. बजाज
11. **अहिंसक आहार - जैन दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में** — 24
    डॉ. पी.सी. जैन
12. **व्यवहारिक जीवन में अहिंसा के सूक्ष्म रूपों का प्रचलन** — 25
    डॉ. वीरसागर जैन
13. **मन, प्रबन्ध और ध्यान** — 27
    डॉ. संजय जैन
14. **समाचार** — 29
15. **प्रश्नोत्तरी** — 39

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

वर्तमान महावीर

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

कमल कीच में ऊपजे, जल में जल से दूर ।
'दिवा' मनुज जीवन जिए, जग में, जग से दूर ।।

इस निमल-विमल-अमल भाव वाला जीव इष्टानिष्ट में अचल, सुख-दु:ख में समता भाव के साथ अविचल रहने वाला जीव, करुणा का सागर, जीव मात्र का मीत, ऋजुता/सरलता, मृदुता/विनम्रता के समग्र परमाणुओं से युक्त घोर दृढ़ता के परम वीर प्राणों के धनी जीव ने महावीर के नाम से उस युग में जन्म लिया जब हिंसा के हाहाकार का बोल-बाला चारों ओर आच्छादित था। मूक पशुओं का एवं सेवक मनुजों का जीवन जीना दुष्वार हो गया था। अन्ध विश्वास की वेदी पर निरीह प्राणियों की बलि सरे आम दी जाती थी। निर्बाध हिंसा के नंगे नाच का वीभत्स कुकृत्य जारी था। ऐसे हिंसक दौर में 'जिओ और जीने दो' का अमृत संदेश महावीर ने ही संसार को दिया। तब विश्व में हिंसा के हाहाकार के बीच अंहिसा का ध्वज धारण कर करुणा की गंगा बहाई और जीव रक्षा का भाव जन-जन में भर दिया था। अब वर्तमान में लगता है कि संसार क्रूरता पूर्वक हिंसा की ओर उन्मुख हो रहा है। अंध विश्वासी कहानियों पर अरबों पशुओं की बलि दी जाने लगी है। मान-मनौती पर लाखों मूक पशुओं का कत्ल हो रहा है। लोभ-लाभ के चक्रपाश में फँसकर अनेक देशों की सरकारें, यांत्रिक कत्लखाने खोलकर धन कमाने के धंधों को अपना वरद हस्त दे रही हैं। दुर्भाग्य से ऐसे देशों के शिरोमणि देशों में भारत की गिनती की जाने लगी है। भारत के अहिंसक भाल पर कसाई होने का कलंक का टीका हमारी सरकार निर्लज्जता पूर्वक लगा रही है। मांस-निर्यात के हिंसक खोटे धंधे की सुनियोजित योजना बना रही है। यह तय किया जा रहा है कि कितने और अधिक पशुओं का कत्ले आम किया जाय कि मांस निर्यात के व्यापार को और बढ़ाकर देश के लिये धन कमाया जाय। ऐसी हिंसक योजना बनाने वाले अधिकारियों एवं नेताओं की बुद्धि पर पाला पड़ गया है। इनकी हिंसक सोच ने हिंसा को बढ़ावा देने का संकल्प कर रखा है। ऐसे क्रूर-हिंसक समय में पुनः आधुनिक महावीर ने भारत की पवित्र अहिंसक भूमि पर जन्म ले लिया है। वह आधुनिक महावीर (महावीर का लघु रूप) विद्यासागर के नाम से जाना जाता है। यह सदैव सत्य है कि सूर्य पूर्व दिशा से उदित होता है परन्तु यह अहिंसा का सूर्य दक्षिण दिशा के कर्नाटक प्रांत के सदलगा ग्राम से उदित हुआ है। जिसने अहिंसा का शंखनाद किया जिसने नारा दिया है पशुवध बन्द करो-गोशाला निर्माण करो। जिस देश में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं उस पवित्र भूमि पर यांत्रिक कत्लखानों के माध्यम से रक्त के पनाले बहाये जा रहे हैं। विद्यासागर जिनके तन पर तार नहीं जो रोज धरती बिछाते हैं और आकाश ओढ़ते हैं। जिनका परिवहन का त्याग है और हजारों किलोमीटर की यात्रा करते हैं जो पदयात्री हैं करपात्री हैं चौबीस घंटे में एक बार जल आहार ग्रहण करते हैं। तप कर जिनका तन धन्य हो गया है। जो यथाजात रूपमें दिगम्बर हैं। जिनके तन की रक्षा सूर्य की धूप करती है। वायु जिनकी सहनशक्ति का वर्द्धन करती है। पर्यावरण जिनका मीत है। प्रकृति जिनकी उपस्थिति से प्रसन्न हो जाती है ऐसे विद्यासागर ने अहिंसा का डंका बजाया है। सम्पूर्ण विश्व विचारशील हो रहा है। तभी तो हिंसक मांसाहारी जन समुदाय शाकाहारी हो रहा है। करुणा की गंगा भारत से / पूर्व से पश्चिम की ओर बह रही

है सदा से जीवों की रक्षा के महान भाव ने ही दिगम्बर साधुओं को वर्षा के चार माह में विहार न करने का विधान दिया है। इसका पालन कठोरता के साथ दिगम्बर साधु करते हैं। वर्तमान के महावीर विद्यासागर जी ने अपने शिष्यों की धाराओं को अहिंसा का शंखनाद करने भारत भूमि पर छोड़ दिया है। वे धाराएँ भी अब सागर का रूप ले चुकी हैं और अहिंसा का डंका बजा रही हैं। अहिंसा की ध्वजा फहरा रही हैं। जिओ और जीने दो के महावीर के नारे को बुलन्द आवाज दे रही हैं, अहिंसा की गंगा संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुँच चुकी है। यह शुभ-संकेत है करुणा के अभियान के लिए।

यदि आप विषमता के भाव से पीड़ित हैं तो सान्निध्य प्राप्त करो समता सागर का। यदि आप विचारों से भटकन अनुभव करते हैं तो सत्संग करिये प्रमाण सागर से, यदि आप सरलता धारण नहीं कर पा रहे है तो दर्शन करिये आर्जवसागर का। यदि आप विषय कषायों के विष से दुखी हैं तो जाइये सुधासागर के पास। यदि आप नियमों के पालन में शिथिल हैं तो सत्संग करिये नियमसागर जी का। यदि आप योग रत नहीं हो पाते तो दर्शन-चर्या करिये योगसागर जी से। ऐसी अनेक धाराएँ उपधाराएँ जीवों की रक्षा के लिए विद्यासागर ने बहाई हैं।

चातुर्मास साधु के लिए सूक्ष्म अहिंसा व्रत के पालन के लिए आवश्यक है। साधु के सत्संग से श्रावक भी लाभान्वित होता है। प्रतिदिन देशना की उपलब्धि, उपवास, तप, त्याग की चर्चा व इनके पालन की ओर उन्मुख होना श्रावक-श्राविकाओं का सौभाग्य है। देव शास्त्र गुरु के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा का होना और उसकी अभिवृद्धि का लाभ मिलना। वर्तमान में श्रावकों में स्वाध्याय की रुचि कम है। इसकी वृद्धि हेतु पाठशाला चलाना एक दूर दृष्टि वाला उपाय है। इस बहाने युवा व प्रौढ़ श्रावकों को भी स्वाध्याय की ओर मोड़ा जा सकता है। वर्तमान में सभी साधु यह लाभ श्रावकों को विभिन्न तरीकों से देने का प्रयास करते हैं। इनमें आर्जवसागर जी ने पाठशाला खोलो अभियान चलाकर शुभ कार्यारंभ किया है। सोलहकारण व्रत करने की देशना व प्रत्यक्ष करने का संस्कार वे दे रहे हैं। यहाँ तक कि विभिन्न ग्रंथों को कंठाग्र करने का अभियान एवं धार्मिक कविता व लेखन का अभ्यास भी करवाना एवं मंच से वाचन करवाना व बोलने का अवसर देना। ये सब श्रावकों उनके बालक-बालिकाओं व महिलाओं को इस ओर मोड़ना नियम-संयम का पालन करने का अभ्यास व रुचि पैदा करना। यह महत्वपूर्ण कार्य सभी साधु करते हैं। पर आर्जवसागर जी नियम से हर चातुर्मास में श्रावकों को ये उपलब्धियाँ करवाते हैं। श्रावक को संस्कारित कर देना जैन धर्म की महान प्रभावना है।

अभी नवम्बर में आचार्य विद्यासागर जी महाराज का आचार्य पद दिवस समारोह पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी के सान्निध्य में जयपुर में धूमधाम से मनाया गया। ये समारोह श्रावकों को उनके मान-मर्दन के क्षण प्रदान करते हैं। प्रेरणा देते हैं मुनि पद - आचार्य पद धारण करने की। चाहे सब कर पावें या नहीं पर शुभ-विचार, शुभ चिंतन के पावन क्षणों की उपलब्धि तो होती ही है। गुरु व गुरु के गुरु के प्रति श्रद्धा-भक्ति में वृद्धि का पुण्यलाभ तो मिलता ही है।

जीवों की रक्षा हो, विश्व में शांति हो, विश्व का कल्याण इन मंगल भावनाओं के साथ आप सब को ढेरसारी शुभकामनाएँ।

''अमृत शाकाहार है विष है मांसाहार।''

संयोग और वियोग से परे है ध्यान

गतांक से आगे .... *-प्रवचन : मुनिश्री आर्जवसागर*

धर्मप्रेमी बन्धुओं,

परिग्रह छोड़ने में सुख है और उसे बांधने में दुःख। पूरा छोड़ नहीं पाये तो थोड़ा-थोड़ा छोड़ें लेकिन अगर अचानक मरण का अवसर आ जाए तो संक्षेप प्रत्याख्यान एक मार्ग है। जब तक उपसर्ग या बाधायें दूर न हो जाए तब तक के लिए खाने-पीने आदि सारी चीजों का त्याग कर देना इसको बोलते हैं संक्षेप प्रत्याख्यान। ऐसी ही लोग आज सल्लेखना लिया करते हैं। यह एक जघन्य सल्लेखना का रूप ही है। अगर अचानक मरण आ गया तो सारी चीजों का त्याग कर देना चाहिए। ऐसी ही हुआ भोपाल में। 2004 में भोपाल चातुर्मास हुआ था। चातुर्मास के बाद की बात है। वहाँ पर एक महिला थी जिनने कि काफी कई प्रकार के व्रत उपवास कर लिये थे। शायद वह अणुव्रत लेने की साधना कर रही थी अशुभ कर्मोदय से उसे कैन्सर हो चुका था। डाक्टर ने कह दिया कि छह महीने बस। जब अन्त में परिवार के लोगों ने बहुत प्रयास किया उसका इलाज करवाने का लेकिन उस माँ ने कह दिया कि अब कुछ भी इलाज नहीं करवाओ और मैंने सब कुछ छोड़ दिया अब मेरी इतनी बात सुन लो; अगर मानना चाहो तो मान जाओ, मेरा हित हो जायेगा। बोले क्या करना माँ? माँ बोली अन्तिम समय में मुझे मुनि महाराजजी के पास ले चलना। मरने के पहले मुझे महाराजजी के दर्शन करा देना यही मेरी अन्तिम इच्छा है। घर वालों ने वास्तव में बात सुन ली। अन्तिम स्टेज आ गयी, अन्त में घर छोड़ा तो नहीं अब उसकी उतनी शक्ति नहीं थी कि हमसे संयम ले सकें, दीक्षा ले सके लेकिन उसने कहा था अन्तिम जीवन मेरा महाराजजी के चरण में हो। तो वास्तव में उसको लेकर के हमारे पास आ गये। मैं था पद्मनाम नगर में, जो भोपाल में ही है। सामायिक कर रहा था। करीब दो बजे उसको लेकर आ गये। उसको श्वास की नली वगैरह लगी हुयी थी। उन्होंने मन्दिर में मेरे सामने एक तरफ लिटा दिया और कहा कर लो महाराजजी का दर्शन, पहले उसने कई बार नवधाभक्ति से आहार भी दिया हुआ है, बहुत धर्म किया था। जब दर्शन कर लिया तो लोगों ने कहा, महाराजजी आपका आशीर्वाद माँग रही हैं। घर के लोग रोने लगे और कहने लगे कि बस आज महाराजजी इनका जीवन हो जायेगा पूरा कुछ नियम व्रत बता दीजिए। मैंने कहा अब ऐसे समय ले आये आप लोग, अब क्या त्याग करना आप लोग समझाओ। लेकिन आप लोग रोते रहेंगे तो हम पास में नहीं आयेंगे, न आशीर्वाद दे सकेंगे। आप अगर उनकी सल्लेखना करना चाहते हो तो रोना बंद कर दो, अगर रोना बंद नहीं हुआ तो हम पास में नहीं आयेंगे। खूब हँसना चाहिए। उसने इतने व्रत किये हैं, अन्तिम समय महाराजजी के पास आने की इच्छा व्यक्त की है तो समझिये वह आत्मा सद्गति में जाने

वाली है। नहीं तो कोई नहीं आता, हाय! हाय! पानी लाओ, दूध लाओ यही होता और कुछ नहीं होता। उसको ये भाव नहीं था कि इन्हीं महाराजजी के पास ले जाना, कोई भी महाराजजी के पास ले जाना ये था। कोई नहीं रोना वो रो रही हैं क्या? नहीं रो रही हैं! फिर आप लोग क्यों रो रहे हैं। अन्त में उसने मोह छोड़ने के लिए बोला न, अब घर मत ले जाना। सब रोना मत करो। अब समाधिमरण पढ़ो, णमोकार मंत्र पढ़ो तो मैं आऊँगा। नहीं तो नहीं आऊँगा। बड़ा हॉल जैसा स्थान था थोड़ी दूर लिटाये हुये थे उसे। सब लोगों ने रोना बन्द कर दिया। भजन पढ़ने लगे, णमोकार मन्त्र पढ़ने लगे। तो मैं पास में गया वहीं खड़ा रहा आशीर्वाद दिया और हमने कहा अब सब कुछ त्याग कर दो। सहर्ष स्वीकार किया, हाथ जोड़े उसने और कहा कि महाराज जी सब कुछ त्याग कर दिया हमने खाना, पीना सब कुछ। पानी तो ले सकती हो, इशारे से कहा मैंने, नहीं नहीं, पूरी सचेत थी वह; पानी भी नहीं चाहिए पूरा त्याग कर दिया। हमने कहा परिग्रह, घर, परिवार, सब छोड़ दो। तो स्वीकार किया; छोड़ दिया। अन्त में रंगीन कपड़े जो तन पर पहने हुयी थी उसकी ओर संकेत कर दिखा रही थी कि इसको बदलवा दो। पिच्छी की तरफ भी इशारा कर रही थी मुझे पिच्छी दे दो। उसका भाव था कि कम से कम मुझे क्षुल्लिका दीक्षा दे दो। मैंने फिर लोगों को कहा देखो ऐसा भाव है लेकिन अब शक्तिहीन अवस्था में कुछ नहीं होता पिच्छी का उपयोग ही नहीं है तो पिच्छी देने से क्या मतलब है। केवल अणुव्रत लिये जा सकते हैं तो अणुव्रत दिला देते हैं हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह वगैरह त्याग दिला देते हैं। पूरा त्याग करवा दिया तो पूरा सचेत होकर के उसने सुना और स्वीकार लिया। बार-बार इशारे से यही कह रही थी कि ये रंगीन कपड़ा बदलवा दो। तो मैंने कहा देखो आप लोग समझ रहे हैं न; बदलवा दो। तो बाजू में थोड़ी दूर एक कमरे में जाकर के रंगीन कपड़े बदलवा दिये सफेद साड़ी पहना दी लोगों ने। फिर पुनः दर्शन को लाये दर्शन लिया तो शाम हो गयी थी। रात होने वाली है यहाँ पर जगह कम है। अलग से स्थान नहीं है तुम परिवार वाले भी साथ हो रात भर क्या करोगे यहाँ। मन्दिर भी छोटा है मन्दिर में समाधि हो जाए तो अच्छा भी नहीं है। मन्दिर भी पूरा शुद्ध करना पड़ेगा। तो कहा तुम कहीं ओर ले जाओ। कहाँ ले जायँ घर का तो इन्होंने त्याग किया है। घर नहीं ले जाओ नेहरू नगर में जो धर्मशाला है न, वहाँ पर तुम ले जाओ मेरी आज्ञा है मेरा आशीर्वाद है। एक कमरा अलग से ले लेना। वहीं पर पहुँचा दिया लोगों ने और रात को आठ बजे समाधिमरण हो गया। त्याग सब कुछ हो ही गया था यहाँ तक कि रंगीन कपड़े भी छोड़ दिये थे। ये है देखो संयोगज पदार्थों को अपने आँखों के सामने छोड़ना। हाँ उतना तो नहीं छोड़ा लेकिन इतना तो छोड़ा आंसू नहीं आये। त्याग की ओर इशारा किया जो कहा सो हाँ बोला। ये है उसका पुण्य उदय इतने सारे व्रत पालन किये थे उसका ही ये फल मिला। अन्त में महाराज जी भी मिल गये। त्याग करने को भी मिल गया। नही तो कौन त्याग कराता ये। लोग रोते-रोते अपने परिणामों को भी खराब कर लेते। तो हमने समझा दिया तो कोई नहीं

रोया। सब कुछ अच्छा हो गया। हम लोग भी पहले ले सकें तो और भी अच्छा है तो दीक्षा लेकर भी ले सकते हैं। सब कुछ छोड़कर तपस्या कर सकते हैं। ऐसा होता है त्याग आप लोग भी समझें। संयोग है तो वियोग निश्चित है। छूटने में दुःख है और छोड़ने में सुख है। इस बात को ध्यान में रखते हुए अपना जीवन धन्य करें। हम लोगों को उत्तम ध्यान करने के लिए अन्तस् की ओर झाँकना जरूरी है। हम अभी तक बाहर की चीजों में उलझे रहे लेकिन सुलझे नहीं। इसलिए हमें अपना परिचय Address जानना अत्यंत आवश्यक है। आप कहेंगे हाँ महाराज जी हमारे पास तो Address है। हम इस नगर के इस गली में रहते हैं इस नम्बर का घर हमारा है और विज़िटिंग कार्ड (Visiting Card) भी दे देंगे। लेकिन यह तो बाहरी परिचय है। आन्तरिक परिचय क्या है? इसको समझना जरूरी है और याद भी कर लेना चाहिए अपने मन रूपी कम्प्यूटर में सेव (Save) कर लेना चाहिए क्योंकि इसको जाने बिना हमें यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि हमें किसका ध्यान और किसलिए ध्यान करना है और अपना लक्ष्य क्या है इसलिए परिचय का वर्णन सुनें,

''कोह कीदृगुणः क्वत्यः किम्प्राप्यः किम्निमित्तकः।
युत्यूह प्रत्यहं नो चेदन्यस्थानेमतिर्भवेत् ।।''

छत्र चूड़ामणि में जीवन्धर चरित्र में कहते हैं कि मैं कौन हूँ? कौन से गुण वाला हूँ? कहाँ से आ रहा हूँ? हमें क्या प्राप्त करना है? और वह कैसे प्राप्त होगा? इस प्रकार के प्रश्न अपनी आत्मा से करें। तो आत्मा से उत्तर मिलेगा। मैं कौन हूँ? मैं सेठ हूँ, व्यापारी हूँ, पूजारी हूँ, कौन हूँ? ये तो बाहर का है ये नहीं हूँ मैं; मैं तो एक आत्मा हूँ। कौन-से गुण वाला हूँ? काला हूँ, गोरा हूँ, तो नहीं; ज्ञान, दर्शन गुण वाला हूँ। कहाँ से आ रहा हूँ? मैं शहर से आ रहा हूँ या घर से आ रहा हूँ, नहीं; मैं तो चारों गतियों में भ्रमण करता हुआ आ रहा हूँ। हमें क्या प्राप्त करना है? संसार की वस्तुयें तो नहीं; हमें तो मोक्ष प्राप्त करना है। क्योंकि वही हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है और वहीं पर आकुलता रहित सच्चा सुख है इसलिए हमें वही प्राप्तव्य है। और वह कैसे मिलेगा? मठ या बैंक बेलेंस बनाने से तो नहीं; तो मोक्षमार्ग से मिलेगा वह मोक्षमार्ग क्या है? तो ''सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः ।''

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों की एकता का नाम मोक्षमार्ग है। चारित्र के अन्त में ही तो ध्यान आता है। पंचाचार में तपाचार और तपाचार में अन्तिम ध्यान है। ध्यान से ही मोक्ष होता है। जहाँ निश्चिय चारित्र है या स्वरूपाचरण चारित्र है। तभी सच्चा ध्यान है और ऐसे ध्यान से ही कर्म कट पाते हैं। इसलिए स्वरूपाचरण की प्राप्ति अन्तिम है और फिर मोक्ष है। उत्तम ध्यान के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव में द्रव्य के अन्दर संहनन भी एक है। किस संहनन से कर्म कट सकते हैं तो कहते हैं कि -

''उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधोध्यानमान्तर्महूर्तात्त।''

त.सू.

उत्तम संहनन वालों के जो चिंताओं को निरोध करके एकाग्रता जो लायी जाती है वह अन्तर्मुहूर्त्त तक चलती है। 48 मिनिट का एक मुहूर्त्त हो जाता है उसके अन्दर सब अन्तर्मुहूर्त्त में आता है। बहुत सारे भेद हैं अन्तमुहूर्त के। सबसे ज्यादा अगर कोई ध्यान कर पाता है एकाग्रता प्राप्त कर पाता है तो वे उत्तम संहनन वाले ही कर पाते हैं। वज्रवृषभनाराच संहनन वज्रनाराच संहनन, नाराच संहनन ये तीन उत्तम संहनन हैं। इसमें वज्रवृषभनाराचसंहनन वाला ही उत्कृष्ट ध्यान करके मोक्ष पाता है। बाकी नहीं जाने पाते हैं। बाकी को ध्यान तो होता है लेकिन उत्कृष्ट नहीं होगा लेकिन यह ध्यान भी परम्परा से मोक्ष का कारण बनेगा। आज भी जो अन्तिम तीन संहनन हैं अर्ध नाराच संहनन, कीलित संहनन, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन इनके माध्यम से किया गया ध्यान परम्परा से मोक्ष का कारण होगा। शुक्ल ध्यान नहीं तो धर्मध्यान होगा। द्रव्य में जीव भी एक द्रव्य है और सबसे उत्कृष्ट द्रव्य में, और जिसको हम ध्येय बनायेंगे वे हैं सिद्ध परमात्मा, उसके बाद अरिहन्त भगवान, नवदेवता, पंच परमेष्ठी में से कोई भी हो सकते हैं और भगवान की मूर्तियाँ, तीन लोक की रचना, इसमें रहने वाले षट्द्रव्य, पंच अस्तिकाय, सप्त तत्त्व, नव पदार्थ ये सब प्रथम भेद में गर्भित हैं। इनके माध्यम से ध्यान होता है। इससे आगे बढ़कर आसन, मुद्रा और आहार का क्रम है। आहार कैसे होता या उपवास, एकाशन आदि ये द्रव्य, ध्यान के लिए आवश्यक हैं। अब आगे इन द्रव्यों के बारे में सूक्ष्मता से समझेंगे।

क्रमशः.........

श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महा महोत्सव

स्थान	:	दॉता - रामगढ़, जिला-सीकर (राजस्थान)
दिनांक	:	20 फरवरी 2011 से 27 फरवरी 2011
आशीर्वाद	:	संत शिरोमणी आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज
सानिध्य	:	परम पूज्य मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य की पूर्ण सम्भावना
प्रतिष्ठाचार्य	:	ब्र. जिनेश, अधिष्ठाता, श्री दिगम्बर जैन वर्णी गुरुकुल, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क सूत्र	:	श्री हरकचंद झांझरी - 9887876059 दॉता रामगढ़, जि. सीकर श्री सुशील कुमार जैन -9571400344 जयपुर

आधुनिक विज्ञान की चुनौतियाँ और जैनागम

प्रो. एल.सी. जैन, जबलपुर

सोमवार 18 अक्टूबर 2010 के जैन गजट में जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई के अध्यक्ष श्री आर.के. जैन एवं सचिव श्री सुरेश जैन ने, ''भौतिकी विद आगे आएं और हॉकिंना के सिद्धान्त को जैन सिद्धान्तों के संदर्भ में विस्तार दें'' शीर्षक से विज्ञान विषयक रुचि दिखाते हुए इस विधा की ओर भी विद्वानों एवं जैन समाज का ध्यान आकर्षित किया है। वह सराहनीय है। विज्ञान के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक विकास में सबसे बड़ा योगदान आइन्स्टाइन का माना जाता है जिसके आधार पर न केवल सृष्टि निर्माण, वरन् भौतिकी के अनेक रहस्यों पर प्रकाश डाला जा चुका है। इनमें से एक हाकिंग की पुस्तक, ''दी थ्योरी आफ एवरीथिंग'' ने विशेष रूप से अपने शोधों के आधार पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है।

आइन्स्टाइन ने सापेक्षता सिद्धान्त को मूलभूत आधार बनाकर गणित के चमत्कार द्वारा ''निश्चलता-इनवेरिएन्स'' नामक नई विधा को जन्म दिया जिसने सम्पूर्ण ज्ञानलोक को प्रकाशित करने में अहम् भूमिका निभाई। यह ज्यामिति गणित कुछ शताब्दियों पूर्व लेवी सिवित्त तथा अन्य यूरोपीय गणितिज्ञों ने उद्घाटित की थी।

उधर जापान के (प्रायः अज्ञात) प्रोफेसर काजुओ कोंडो ने अपने प्रायः 45 वर्षों के शोध कार्य से न केवल भौतिकी की शक्ति रूप निमित्तों की एक सूची रचना की वरन् कवागुची के लोकों की ज्यामिति के आधार पर भौतिकी, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, एवं मनोविज्ञान की रहस्यमय शक्तियों को एक सूत्र में बांधने का अद्वितीय प्रयास किया (1956 ई. से लेकर 2009 ई. तक)।

उपर्युक्त सभी समसामयिक विज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए, जब मुझे इंडियन नेशनल सांइस अकादमी ने विस्तार से जैन विज्ञानों के ग्रंथों पर प्रोजेक्ट क्रियान्वित करने का आमंत्रण 1984 में दिया, तब मैंने 1984 से लेकर 1995 के मध्य प्रोजेक्ट क्रियान्वित किये जो श्री आर.के. जैन और श्री सुरेश जैन के अभिप्राय की पूर्ति करते हैं तथा उनसे भी आगे जो हमने आइन्सटाइन के सिद्धान्त की भावना लिये हुए अनेक हस्तलिपियाँ तैयार की हैं जो अभी भी अप्रकाशित हैं। जो कुछ भी अभी तक हम प्रकाशित करवा सके हैं वे इस प्रकार निम्नलिखित हैं-

1. एक्जेक्ट साइंसेज़ इन दा कर्म एंटिक्विटी
   खंड - 1 से 4 तक (तिलोयपण्णत्ती, त्रिलोक सार, लोक विभाग एवं जम्बूद्वीव पण्णत्ति संगहो। आदि।)
2. मेथामेटिकल साइंसेज़ इन दा कर्म एंटिक्विटी खंड 1-2 (गोम्मटसार जीव काण्ड एवं गोम्मटसार कर्म काण्ड)

3. सिस्टेमिक साइंसेज़ इन दा कर्म एंटिक्विटी, खंड 1-3 (लब्धिसार, क्षपणासार एवं विविध तथा परिशिष्ट आदि)

ध्यान रहे कि जैन आगम में कर्म सिद्धान्त की यह गणितीय प्रतिरूप लिये परम्परा प्रायः 2300 वर्ष की है जो दीक्षित मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त (प्रभाचंद्राचार्य) से लेकर पंडित टोडरमल (1921-1761) पर समाप्त होती प्रतीत होती है। प्रभाचंद्राचार्य दस पूर्वी तथा उनके गुरुवर भद्रबाहु आचार्य चौदह पूर्वी थे। यह विश्व की धरोहर, बेबिलोन की क्यूनिफार्म टेक्ट्स की प्रायः 500 वर्ष की परम्परा लिये विश्व की अनुपम धरोहर से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। बैबिलोन की परम्परा ईसा काल के आसपास की है तथा गणित ज्योतिष के प्रायोगिक अवलोकनों पर आधारित रही है। कर्म सिद्धान्त की परम्परा परम महर्षियों, योगियों की प्रायोगिक साधनाओं के आधार पर अवलंबित रही है।

उपर्युक्त तीनों शीर्षक से सम्पन्न सामग्री पाठकों को सारभूत पुस्तक ''दा ताओ ऑफ जैन साइंसेज'' में (जैन विज्ञानों का मार्ग) में दृष्टव्य है। इस पुस्तक को ''कर्मथ्योरी आफ एवरीथिंग'' कहा जा सकता है तथा हॉकिंग आदि विद्वानों के प्रकाशनों से तुलना में रखा जा सकता है। इस तुलनात्मक अध्ययन को हमने दो हस्तलिपियों में तैयार किया है। एक आइंस्टाइन के सिद्धान्त पर आधारित तथा दूसरी काजुओ कोंडो के सिद्धान्त पर आधारित है।

हमारा सुझाव है कि समाज हमारे द्वारा संगृहीत व्यक्तिगत सामग्री को लोकार्पित करने की व्यवस्था पर विचार करे तथा श्री चक्रेश कुमार जैन 1. देवयानी काम्प्लेक्स, जयनगर, जबलपुर से सम्पर्क स्थापित कर प्रकाशित तथा अप्रकाशित सामग्री के संरक्षण पर गम्भीरता से कार्य को आगे बढ़ाने का पराक्रम करे।

अंततः उपसंहार रूप से हमारा निवेदन है उपरोक्त विषय की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए भावविज्ञान के सह सम्पादक, डॉ. अजित कुमार जैन, से सम्पर्क स्थापित करें। करणानुयोग का विषय अत्यंत गम्भीर है तथा शेष तीन अनुयोगों के विषयों को आधार रूप फ्रेम देने के लिये अप्रतिम शैली में निर्मित किया गया है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि सापेक्ष प्रमाणों द्वारा जीव एवं पुद्गल परमाणुओं के पारस्परिक सम्बंध कर्म सिद्धान्त का विषय बन जाते हैं। वहीं ''थ्योरी ऑफ एवरीथिंग'' तथा अन्य वस्तुओं के स्वभाव, विभाव, के अलग-अलग विवरण प्रस्तुत करते चले जाते हैं। यहाँ सिद्धान्त का प्रमुख लक्ष्य मुक्ति की प्राप्ति ही है जिसकी प्रक्रिया, साधना विधि में अनेक प्ररूपणों से होकर गुजरना पड़ता है। यहाँ इन प्रक्रियाओं और परिणामों के प्रायोगिक रूपों को जैनागम कर्म सिद्धान्त में गणितीय सूत्रों में बाँधकर त्रिलोकवर्ती तथा त्रिकालवर्ती घटनाओं का विवरण एवं विवेचन प्रस्तुत किया गया है। ऐसे गहन गहरे विषय के तुलनात्मक अध्ययन हेतु एक विशिष्ट संस्थान की परम आवश्यकता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

ऋणयोर्धनयोर्घाते भजने च फलं धनम् । ऋणं धनर्णयोस्तु स्यात्स्वर्णयोर्विवरं युतौ ॥५०॥
ऋणयोर्धनयोर्योगो यथासंख्यमृणं धनम् । शोध्यं धनमृणं राशेः ऋणं शोध्यं धनं भवेत् ॥५१॥
धनं धनर्णयोर्वर्गो मूले स्वर्णे तयोः क्रमात् । ऋणं स्वरूपतोऽवर्गो यतस्तस्मान्न तत्पदम् ॥५२॥

अथ संख्यासंज्ञा

शशी सोमश्च चन्द्रेन्दू प्रालेयांशू रजनीकरः । श्वेतं हिमगु रूपं च मृगाङ्कश्च कलाधरः ॥५३॥
द्वि द्वे द्वावुभौ युगलयुग्मं च लोचनं द्वयम् । दृष्टिर्नेत्राम्बकं द्वन्द्वमक्षिचक्षुर्नयं दृशौ ॥५४॥
हरनेत्रं पुरं लोकं त्रै (त्रि) रत्नं भुवनत्रयम् । गुणो वह्निः शिखी ज्वलनः पावकश्च हुताशनः ॥५५॥
अम्बुधिर्विषधिर्वार्धिः पयोधिः सागरो गतिः । जलधिर्बन्धश्चतुर्वेदः कषायः सलिलाकरः ॥५६॥
इषुर्बाणं शरं शस्त्रं भूतमिन्द्रियसायकम् । पञ्च व्रतानि विषयः करणीयस्कन्तुसायकः ॥५७॥
ऋतुजीवो रसो लेख्या द्रव्यं च षट्कं खरम् । कुमारवदनं वर्णं शिलीमुखपदानि च ॥५८॥
शैलमद्रिर्भयं भूध्रो नगाचलमुनिर्गिरिः । अश्वाश्विपन्नगा द्वीपं धातुर्व्यसनमातृका ॥५९॥
अष्टौ तनुर्गजः कर्म वसुवारणपुष्करम् । द्विरदं दन्ती दिग्दुरितं नागानीकं करी यथा ॥६०॥

---

१ केवल M में ५३ से ६८ तक गाथाएँ प्राप्त हुई हैं । ये मूल में यत्र तत्र अशुद्ध हैं ।

दो ऋणात्मक या दो धनात्मक राशियाँ एक दूसरे से गुणित करने पर या भाजित होने पर धनात्मक राशि उत्पन्न करती हैं । परन्तु, दो राशियाँ जिनमें एक धनात्मक तथा दूसरी ऋणात्मक एक दूसरे से गुणित अथवा भाजित होने पर ऋणात्मक राशि उत्पन्न करती हैं । धनात्मक और ऋणात्मक राशि जोड़ने पर प्राप्त फल उनका अन्तर होता है ॥५०॥ दो ऋणात्मक राशियों या दो धनात्मक राशियों का योग क्रमशः ऋणात्मक और धनात्मक राशि होता है । किसी दी हुई संख्या में से धनात्मक राशि घटाने के लिये उसे ऋणात्मक कर देते हैं और ऋणात्मक राशि घटाने के लिये उसे धनात्मक कर देते हैं (ताकि दोनों क्रियाओं में केवल योग से इष्ट फल की प्राप्ति हो जावे ।) ॥५१॥

धनात्मक तथा ऋणात्मक राशि का वर्ग धनात्मक होता है; और उस वर्ग राशि के वर्गमूल क्रमशः धनात्मक और ऋणात्मक होते हैं । चूँकि वस्तुओं के स्वभाव (प्रकृति) में ऋणात्मक राशि, वर्गराशि नहीं होती इसलिये उसका कोई वर्गमूल नहीं होता ॥५२॥ अगले दस सूत्रों में कुछ वस्तुओं के नाम दिये गये हैं जो वारंवार अंकों और संख्याओं को प्रदर्शित करने के लिये अंकगणित संकेतना में प्रयुक्त किये

तब वह वास्तव में अपरिवर्तित नहीं रहती है । भास्कर ने ऐसे शून्य भागों को खहर कहा है और उसका मान अयथार्थ अनन्त दिया है । महावीराचार्य स्पष्टतः सोचते हैं कि शून्य द्वारा भाजन, भाजन ही नहीं । डाक्टर हीरालाल जैन ने इस पर यह सुझाव दिया है कि सम्भवतः ग्रंथकार का ऐसे भाजन से निम्नलिखित अभिप्राय हो—

मानलो २० वस्तुएँ ५ व्यक्तियों में बाँटना है, तब प्रत्येक व्यक्ति को ४ वस्तुएँ उपलब्ध होंगी । यदि इन २० वस्तुओं का विभाजन ० (शून्य) व्यक्तियों में करना हो तब कोई व्यक्ति ही न रहने से वह संख्या अपरिवर्तित रहेगी ।

(५२) यह सूत्र महावीराचार्य की सूक्ष्म अंतर्दृष्टि का प्ररूपक है । इसके विषय में हम प्रस्तावना में ही संकेत कर चुके हैं । साधारणतः किसी धनात्मक राशि का वर्गमूल निकालने पर (धनात्मक एवं ऋणात्मक) दो राशियाँ उत्पन्न होती हैं, उनमें से इष्ट फल प्राप्ति के लिये धनात्मक या ऋणात्मक वर्गमूल ग्रहण करना उपयुक्त होता है । इस प्रकार ग्रंथकार द्वारा निर्दिष्ट यह नियम भी उनकी प्रतिभा का निरूपक है ।

नव नन्दं च रन्ध्रं च पदार्थं लब्धकेशवौ । निधिरत्नं ग्रहाणं च दुर्गानाम च संख्यया ॥६१॥
आकाशं गगनं शून्यमम्बरं खं नभो वियत् । अनन्तमन्तरिक्षं च विष्णुपादं दिवि स्मरेत् ॥६२॥

अथ स्थाननामानि

एकं तु प्रथमस्थानं द्वितीयं दशसंज्ञिकम् । तृतीयं शतमित्याहुः चतुर्थं तु सहस्रकम् ॥६३॥
पञ्चमं दशसाहस्रं षष्ठं स्याल्लक्षमेव च । सप्तमं दशलक्षं तु अष्टमं कोटिरुच्यते ॥६४॥
नवमं दशकोट्यस्तु दशमं शतकोटयः । अर्बुदं रुद्रसंयुक्तं न्यर्बुदं द्वादशं भवेत् ॥६५॥
खर्वं त्रयोदशस्थानं महाखर्वं चतुर्दशम् । पद्मं पञ्चदशं चैव महापद्मं तु षोडशम् ॥६६॥
क्षोणी सप्तदशं चैव महाक्षोणी दशाष्टकम् । शङ्खं नवदशं स्थानं महाशङ्खं तु विंशकम् ॥६७॥
क्षित्यैकविंशतिस्थानं महाक्षित्या द्विविंशकम् । त्रिविंशकमथ क्षोभं महाक्षोभं चतुर्नयम् ॥६८॥

अथ गणकगुणनिरूपणम्

लघुकरणोहापोहानालस्यग्रहणधारणोपायैः । व्यक्तिकराङ्कविशिष्टैर्गणकोऽष्टाभिर्गुणैर्ज्ञेयः ॥६९॥
इति संज्ञा समासेन भाषिता मुनिपुङ्गवैः । विस्तरेणागमाद्वेद्यं वक्तव्यं यदितः परम् ॥७०॥

इति सारसंग्रहे गणितशास्त्रे महावीराचार्यस्य कृतौ संज्ञाधिकार समाप्तः ॥

गये हैं । वे यहाँ अनुवादित नहीं किये गये हैं ॥५३–६२॥

स्थान-नामावलि [संकेतनात्मक स्थानों के नाम]

प्रथम स्थान वह है जो एक (इकाई) कहलाता है, दूसरा स्थान दश (दहाई), तीसरा स्थान शत (सैकडा) और चौथा सहस्र (हजार) कहलाता है ॥६३॥ पाँचवा दस सहस्र (दस हजार), छटवाँ लक्ष (लाख), सातवाँ दशलक्ष (दस लाख) और आठवाँ कोटि (करोड़) कहलाता है ॥६४॥ नौवाँ दशकोटि (दस करोड़) और दसवाँ शतकोटि (सौ करोड़) कहलाता है। ग्यारहवाँ स्थान अरबुद (अरब) और बारहवाँ न्यर्बुद (दस अरब) कहलाता है ॥६५॥ तेरहवाँ स्थान खर्व (खरब) और चौदहवाँ महाखर्व (दस खरब) कहलाता है। इसी तरह, पंद्रहवाँ पद्म और सोलहवाँ महापद्म कहलाता है ॥६६॥ पुनः सत्रहवाँ क्षोणी, अठारहवाँ महाक्षोणी कहलाता है। उन्नीसवाँ स्थान शङ्ख और बीसवाँ महाशङ्ख कहलाता है ॥६७॥ इक्कीसवाँ स्थान क्षित्या, बाईसवाँ महाक्षित्या कहलाता है। तेईसवाँ क्षोभ और चौबीसवाँ महाक्षोभ कहलाता है ॥६८॥

गणकगुणनिरूपण

निम्नलिखित आठ गुणों से गणितज्ञ की पहिचान होती है—

(१) लघुकरण—हल करने में शीघ्र गति, (२) ऊह—अग्रविकल्प, कि इच्छित फल प्राप्त हो सकेगा, (३) अपोह—अग्रविकल्प, कि इच्छित फल प्राप्त नहीं होगा, (४) अनालस्य—प्रमाद न होना, (५) ग्रहण—समझने की शक्ति, (६) धारण—स्मरण रखने की शक्ति, (७) उपाय—साधन करने की नई रीतियाँ खोजना, एवं (८) व्यक्तिकराङ्क—उन संख्याओं तक पहुँचने का सामर्थ्य रखना जो अज्ञात राशियों को ज्ञात बना सकें ॥६९॥ इस प्रकार, मुनि पुङ्गवों ने संक्षेप में परिभाषाओं का कथन किया है। जो कुछ इसके विषय में आगे विस्तार रूप से कहा जाना चाहिए उसे आगम[1] के अध्ययन से ज्ञात करना चाहिये। इस प्रकार, महावीराचार्य की कृति सारसंग्रह नामक गणित-शास्त्र में, संज्ञा अधिकार समाप्त हुआ ॥७०॥

---

१ यहाँ आगम का आशय, सम्भवतः जिनागम प्रणीत अलौकिक गणित से हो जिसके विषय में ग्रंथकार द्वारा मात्र यहीं संकेत किया गया प्रतीत होता है।

क्रमशः ....

क्या सोने चांदी के वर्क का उपयोग वेदियों अथवा देवालयों में करना धर्मसंगत है?

आशुतोष कुमार जैन

भारतीय जैन संस्कृति में देवालय एवम् वेदियों का महत्व किसी से छिपा नहीं है परन्तु जैन देवालय में वर्तमान में स्वर्ण का कार्य कितना धार्मिक है इसमें संशय है।

चांदी और सोने के वर्क जानवरों के आंतों के हिस्सों में सोने की छोटी पट्टी रखकर उसे पीट-पीट कर बनाये जाते हैं। इन्टरनेट पर उपलब्ध जैनिवर्ड डॉट कॉम, यू-टयूब डॉट कॉम आदि के अनुसार भी बैल तथा अन्य जानवरों की आतों के आयताकार टुकड़े काटकर एक के ऊपर एक रखकर, फोटो रखने की एलबम जैसी तैयार की जाती है। इसी को कुछ वर्क बनाने वाले भ्रम पैदा करने के लिए इसे जापानी कागज कहते हैं। इन्हीं टुकड़ों के बीच में सोने या चांदी रखकर उसे पीट-पीट कर तैयार वर्क देवालय की शोभा कैसे बढ़ा सकता है यह एक बड़ा प्रश्न चिह्न है।

जैनों के अलावा अन्य कुछ धर्मावलम्बियों ने सोने व चांदी के वर्क खाने का निषेध इसी अशुद्धता के कारण है। पूर्व समय में वर्क के स्थान पर सोने-चांदी के पत्रे मन्दिरों में इस्तेमाल होते थे जो शुद्ध रहते थे क्योंकि उनके बनाने की विधि ऐसी नहीं थी।

आँत का एक आयताकार टुकड़ा 25 से 30 वर्क बनाने के बाद घिस जाता है तथा नया टुकड़ा लेना पड़ता है। अतः आँत का कुछ न कुछ अंश वर्क साथ जरूर रहता है। हैदराबाद के एक वर्कों के बड़े व्यापारी के अनुसार सोने-चांदी के वर्क व चमड़े में कोई फर्क नहीं है। जानकारी के अनुसार दुनिया में वर्क बनाने की कोई अन्य विधि अभी तक उपलब्ध नहीं है। वर्क चाहे मन्दिर में बने या आँखों के सामने, तैयार तो आँतों में ही होता है।

ऐसे में सोने का वर्क मन्दिरों व वेदियों पर तथा चांदी का वर्क किसी सिन्दूरी देवता पर भी लगाना कितना धर्मसंगत है? पहले जहाँ जिनालय निर्माण में पानी भी छानकर प्रयोग होता था वहाँ होड़, चकाचौंध व दिखावे के लिए हिंसा का सहारा लेना कितना विवेकपूर्ण है? वर्क बनाने की विधि इंटरनेट पर वेबसाइट्स में विस्तृत रूप से उपलब्ध हैं।

1. http:/miteshvasa.blogspot.com/search?q=varakh
2. http:/www.jainworld.com/jainbook/images/20/UNIVERSAL_DECLERATION_OF_TH.htm

(दैनिक भास्कर, पानीपत (दिनांक 17 अप्रैल 2010) समाचार पत्र में वर्क संबंधित विवरण दिया गया

है कि चांदी के वर्क में लिपटी मिठाई कैंसर जैसी बीमारी का घर तो है ही, लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ भी है। जी हां, चांदी का यह वर्क पशुओं की आंतों के जरिए जिस तरह बनता है उससे यह शाकाहार तो कतई नहीं रहता। योगगुरु बाबा रामदेव ने भी इस तरीके से वर्क बनाने पर प्रतिबंध की मांग की है। चांदी का वर्क बनाने की प्रक्रिया की जानकारी दैनिक भास्कर ने जुटाई। इसमें जो तथ्य सामने आए, वह ऐसी मिठाइयों का सेवन करने वाले किसी भी व्यक्ति को झकझोर सकते हैं। दरअसल इसे पशुओं की ताजा आंत के अंदर रखकर कूट कूट कर बनाया जाता है। दूसरी तरफ विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि चांदी का वर्क मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।

लखनऊ स्थित इंडियन इंस्ट्यिूट ऑफ टॉक्सिकोलॉजी रिसर्च (आईआईटीआर) के एक अध्ययन के मुताबिक बाजार में उपलब्ध चांदी के वर्क में निकल, लेड, क्रोमियम और कैडमियम पाया जाता है। वर्क के जरिए हमारे पेट में पहुंचकर ये कैंसर का कारण बन सकते हैं। 2005 में हुआ यह अध्ययन आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वर्क बनाने की प्रक्रिया जस की तस है। शिमला के इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजेश कश्यप के अनुसार धातु चाहे किसी भी रूप में हो, सेहत के लिए काफी नुकसानदेह होती है। इससे सबसे ज्यादा नुकसान लीवर, किडनी और गले को होता है। आईटीसी की मेटल एनालिसिस लेबोरेटरी के एन. गाजी अंसारी के अनुसार चांदी हजम नहीं होती। इससे पाचन प्रक्रिया पर प्रतिकूल असर तो पड़ता ही है, नर्वस सिस्टम भी प्रभावित हो सकता है।

योगगुरु बाबा रामदेव ने भास्कर से कहा कि चांदी का वर्क बनाने के ऐसे कारखानों को तुरंत बंद करना चाहिए। यह धार्मिक अशुद्धि का मामला है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदिक दवा के रूप में चांदी की भस्म का सेवन ठीक रहता है। वह भी निश्चित मात्रा में। दिगंबर जैन साधुओं का पूर्व से ही मानना है कि ऐसे वर्क से बनी मिठाई खाने योग्य नहीं होती। ऐसी मिठाईयों से बचना चाहिये।

आजकल बाजार में चांदी के नाम पर एल्यूमिनियम गिलेट आदि के वर्क धडल्ले से बिक रहे हैं जो कही ज्यादा हानिकारक हैं। पुणे स्थित एनजीओ ब्यूटी विदाउट क्रुएलिटी (बीडब्ल्यूसी) के मुताबिक एक किलो चांदी का वर्क 12,500 पशुओं की आंतों के इस्तेमाल से तैयार होता है। एक अनुमान के मुताबिक देश में सालाना लगभग 30 टन चांदी के वर्क की खपत होती है। इसे बनाने का काम मुख्य रूप से कानपुर, जयपुर, अहमदाबाद, सूरत, इंदौर, रतलाम, पटना, भागलपुर, वाराणसी, गया और मुबंई में होता है। सोने का वर्क भी ठीक इसी प्रकार बनता है। विश्व में और कोई विधि उपलब्ध नहीं है।

ऐसे बनता है वर्क :

चांदी के पतले-पतले टुकड़ों को पशुओं की आंत में लपेट कर एक के ऊपर एक (परत दर परत) रखा जाता है कि एक खोल बन जाए। फिर इस खोल को लकड़ी से धीरे-धीरे तब तक पीटा जाता है जब तक चांदी के पतले टुकड़े फैलकर महीन वर्क में न बदल जाए। पशुओं की ताजा आंत मजबूत और मुलायम होने से जल्दी नहीं फटती है। इसी वजह से इसका उपयोग किया जाता है।

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

गतांक से आगे ....

प्रायः सभी फलों को शीघ्र पकाने एवं चमकीले रंगों से रंगने के लिए कुछ रसायनों **जैसे कैल्शियम कार्बाइड** आदि का उपयोग किया जाता है। **कैल्शियम कार्बाइड में उपस्थित आर्सेनिक तथा फास्फोरस** आदि जहरीले रसायन से व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार हो सकता है, विशेष रूप से मस्तिष्क संबंधित (Nuerologocal System) रोगों से। कैल्शियम कार्बाइड के सेवन से सिर दर्द/भारीपन, मानसिक बीमारियां हो जाती हैं। सूखे मेवों में भी चमकीले रंगों से रंगने के लिए कुछ रसायनों **जैसे सल्फर** आदि का उपयोग किया जाता है। सब्जियों में भी चमकीले रंगों से रंगने के लिए कुछ रसायनों का उपयोग किया जाता है। अतः इस प्रकार से प्रदूषित फलों/मेवों/सब्जियों के सेवन से सावधान रहने, बचने एवं विकल्प खोजने की नितााँत आवश्यकता है। फलों/मेवों/सब्जियों के सेवन से पूर्व उन्हें खूब अच्छे से बार-बार धोकर एवं छिल्का हटाकर उपयोग करना आवश्यक है।

वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण ने अद्‌भुत आविष्कार के रूप में जहां एक और शिक्षा के साधन व मनोरंजन हेतु दूरदर्शन चलचित्र (सिनेमा) के अलावा केबिल व डिश टी.व्ही. के सैकड़ों चैनल्स, संचार साधनों के अंतर्गत मोबाईल एवं कम्प्यूटर पर इन्टरनेट आदि जैसे उपहार मानव को सौंपे जिससे शिक्षा के साधन, समाज शिक्षा के लिये उपयोगी, कार्यक्रमों की विविधता, कलात्मक रुचियों की सन्तुष्टि आदि के द्वारा मानव जीवन को अत्यन्त प्रभावित एवं अनेक सुविधाओं से उपकृत किया है। वहीं दूसरी ओर फिल्मों, दूरदर्शन से निजी सुख-सुविधाओं, भोग-विलास, मोबाइल, उपहार, विलासिता, मनोरंजन, फिटनेस सेंटर, बाहर खाने, **अच्छा दिखने और अच्छा महसूस करने की इच्छा** को भी बढ़ावा मिला है जिसके कारण इन मदों की **इच्छाओं** की पूर्ति करने पर खर्च बढ़ता जा रहा है। बढ़ते खर्च की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए युवा वर्ग के भटकने से चोरी करने, मारधाड़, तस्करी, लूट-मार तथा अन्य अपराध करने की गतिविधियों में अविश्वसनीय वृद्धि हो रही है। साथ ही कुत्सित या अश्लील प्रदर्शन, मारधाड़ से भरे वीभत्स दृश्यों से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है तथा बुरी बातों का उनके आचरण पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रकार फिल्में व दूरदर्शन के कार्यक्रम नई पीढ़ी का नैतिक पतन कर गुमराह कर रहे हैं। सस्ती एवं घटिया फिल्में केवल मनोरंजन ही नहीं करती अपितु टी.व्ही. और कम्प्यूटर को समीप से देखने; गेम खेलने से आँखें कमजोर एवं शारीरिक मोटापे में वृद्धि हो रही है।

बढ़ता मोटापा डायबिटीज एवं ब्लडप्रेशर के रोगों का जन्मदाता है। छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता बढ़ता हुआ फैशन, शिक्षा के प्रति अरुचि के लिए किसी हद तक दूरदर्शन को भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। अभिभावकों की यही शिकायत रहती है कि बच्चे पढ़ाई करने से जी चुराते हैं, वे टी.व्ही. के सामने बैठकर ही अपना कीमती समय बर्बाद कर देते हैं। युवा वर्ग का नैतिक पतन होने के कारण संस्कृति को विस्मृत कर रहा है।

आसानी से उपलब्ध विदेशी चैनलों ने भारतीय संस्कृति को प्रदूषित किया है। इन चैनलों पर मद्यपान, कामुक डिस्को, अश्लील दृश्य, नृत्य, पाश्चात्य संगीत, हिंसा तथा पतले वस्त्रों में अर्धनग्न प्रदर्शन किया जाने से युवा वर्ग भटक गया है और उसकी नैतिकता के पतन का द्वार खुल चुका है। युवा वर्ग अपने आप को अत्याधिक आधुनिक दिखाने केलिए नायक-नायिकाओं जैसी वेशभूषा तथा वैसा ही फैशन अपनाने की दौड़ में शामिल हो चुका है। चोरी करने, मारधाड़, तस्करी, लूट-मार तथा अन्य अपराध करने के नए-नए तरीके फिल्मों में जिस प्रकार प्रदर्शित किए जाते हैं उससे आज की युवापीढ़ी अपराधिक प्रवृत्ति की ओर बढ़ रही है। इस प्रकार युवा पीढ़ी की कोमल भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। कम्प्यूटर पर आधारित गेम्स में हिंसक गतिविधियाँ वाले (जैसे फाइटिंग (लड़ाई), हथियार चलित युद्ध (वार गेम्स), मानव या जानवरों को मारने वाले......) खेल खेलने से हिंसक प्रवृत्ति व क्रूरता बढ़ती है तथा करुणा या दया भाव घटता जाता है। इन सभी के परिणामस्वरूप आपस में लड़ने-झगड़ने की इच्छा में तीव्र वृद्धि होती जा रही है।

विगत अनेक वर्षों से जलवायु के अनुकूल सूती वस्त्रों का उपयोग किया जाता रहा है। सूती वस्त्रों में शरीर को सोखकर त्वचा को अनुकूल बनाने की जो क्षमता या गुण है, वह विश्व के किसी भी प्रकार के अन्य प्रकार के वस्त्रों में नहीं है। सूती वस्त्रों से किसी भी प्रकार की एलर्जी नहीं होती है। विदेशों में भारत, लंका, चीन आदि से जितना निर्यात सूती वस्त्रों का होता है उतना निर्यात अन्य प्रकार के वस्त्रों का नहीं होता है। जींस आदि सूती वस्त्र से ही बनाए जा रहे हैं। किसी भी मौसम में थोड़े ढीले, पूर्ण सूती वस्त्र अनुकूल, सुविधाजनक तथा स्वास्थ्यवर्धक हैं। दैनिक जीवन में सादगी तथा सहजता मूल्यवान है जिसके पहनावे से ये गुण प्रकट होते हैं।

सिंथेटिक वस्त्रों, रेशमी, कोसा, सिल्क वस्त्र किसी भी प्रकार से शरीर को त्वचा की एलर्जी से नहीं बचा सकते हैं, अपितु ऐसी एलर्जी पैदा करते हैं जो अनेक उपचारों से भी ठीक नहीं होती है। पसीने सोखने की क्षमता या गुणवत्ता इन वस्त्रों में नहीं पाई जाती है। इन वस्त्रों का पहनावा सुविधाजनक नहीं है अपितु भड़काऊ एवं उबाऊ प्रकार का पहनावा है। बेटियों को स्टाइलिश एवं ट्रेंडी कपड़ों (शार्टस्कर्ड, टॉप, जींस, कैप्री आदि), जो आजकल उनका मनपसंद पहनावा है, को पहनना भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं होने से अश्लील या अभद्र माने जाते हैं। दूरदर्शन चैनलों, फिल्मों हाई सोसायटी आदि में इसे फैंशन का आवश्यक अंग माना जाता है जो अपनी मनमानी है और भारतीय संस्कृति का अपमान है।

विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका

कु. आराधना जैन

गतांक से आगे ....

स्व के प्रति युवा शक्ति की भूमिका – विश्व शान्ति के लिए यह अति आवश्यक है कि युवा प्रथम स्वयं ही शान्ति को प्राप्त करें तभी वह अपने सम्पर्क में आने वालों को सुख शान्ति, सहयोग संतुष्टि दे सकते हैं। युवा शक्ति अपनी जीवन शैली को शुद्ध, पवित्र, सदाचरणवान बनाये रखने के लिए अपने मनोविकारों पर विजय प्राप्त करें, व्यसन मुक्त जीवन को ग्रहण करें और सादा जीवन उच्च विचार को प्रमुखता दें, नैतिक, संयमित, विवेकी, धार्मिक, आध्यात्मिक जीवन जीयें। महापुरुषों, महामनीषियों के जीवन आदर्श को अपने जीवन चरित्र में स्थान दें। जीवन का ध्येय शुद्धता को प्राप्त करना है। शुद्ध साध्य को पाने के लिए साधन की शुद्धता भी आवश्यक है। जीवन साधना में खानपान भी सहायक होता है। आज जितनी भी अनीति, आतंक और अमर्यादा का संचार हो रहा है, वह सब खानपान की अशुद्धि और तामसिक भोजन का ही परिणाम है। युवा शक्ति दिशा हीन न हो इसलिए खानपान, आचरण-व्यवहार की शुद्धता रखकर अपने प्रति भूमिका का निर्वहन कर शान्तिमय जीवन जिऐं तभी दूसरों को भी आनन्द व सुख शान्ति दे सकते हैं। स्वयं को गढ़ने में सहयोग करना युवाओं की जीवन नीति बन जाए तो विश्व शान्ति में प्राण फूंके जा सकते हैं। युवा जीवन के पुरोधा विवेकानन्द ने युवाओं से बीते युग में कहा था – be and make अर्थात् बनो और बनाओ। दीप से दीप जलाने की प्रक्रिया चल पड़े तो सम्पूर्ण विश्व शान्तिमय रोशनी से जगमग हुए बिना नहीं रहेगा।

पारिवारिक क्षेत्र में युवा शक्ति की भूमिका – युवा पीढ़ी परिवार के मध्य की कड़ी होती है, जिसके एक और बचपन तो दूसरी ओर वृद्धावस्था वाले वृद्ध जन होते हैं। युवा अपने पारिवारिक दायित्वों को प्रेम, समन्वय, सौहार्द, त्याग और सामंजस्य के साथ पहचान कर उन्हें पूर्ण करें। परिवार में वृद्ध और बच्चे सभी होते हैं। युवा अपने अभिभावकों के सुख-दुःख में साझेदार बनें, घर में ऐसा वातावरण न हो जिससे परिवारजनों को दुःखी होना पड़े। अपने से बड़ों की दुःख तकलीफ को जानकर उनकी सेवा करें। परिवार में ही वृद्ध जनों की उचित देखरेख हो तो आज वृद्ध आश्रमों की जो वृद्धि हो रही है तो शायद वह न हो। युवाओं को वृद्धों का आशीर्वाद तो मिलेगा ही उनके अनुभव का लाभ भी उन्हें प्राप्त होगा।

युवा अपनी संतान के प्रति भी सजग रहें उन्हें श्रेष्ठ शिक्षा, स्वास्थ्य तो दें ही साथ में श्रेष्ठ संस्कार भी प्रदान करें। केवल स्कूल और आध्यापकों के भरोसे उन्हें न छोड़ें। यह जानना भी आवश्यक होगा कि संतान की संगत किस तरह की है। कहीं वह कुसंगति से व्यसन और बुरी आदतों की शिकार तो नहीं हो रही है। पारिवारिक व्यवस्थाओं के साथ परिवार को संगठित और सुसंचालित रखने में युवाओं की विशिष्ट भूमिका होती है तभी परिवार में शान्ति का सुखद वातावरण निर्मित होता है। परिवार शान्तिमय

होगा तो युवा अपने कार्यों को पूर्ण मनोयोग के साथ कर सकेंगे। सुसंस्कारवान युवा शक्ति मिलजुल कर परिवार को स्वर्ग जैसा सुखमय बना सकती है और आदर्श स्थापित कर सकती है।

सामाजिक क्षेत्र में युवा शक्ति की भूमिका – प्रत्येक व्यक्ति समाज का अंग होता है, उसे अपनी सामाजिक संस्कृति का सदैव ध्यान रखना चाहिए। अपने तुच्छ स्वार्थ, अहंकार की पुष्टि हेतु सामाजिक व्यवस्था का विखण्डन नहीं करना चाहिए। युवा शक्ति को विश्व समाज में अज्ञानता के विरुद्ध, गरीबी के विरुद्ध, अन्याय–अत्याचार, भुखमरी, बीमारी, दमनात्मक क्रियाकलापों, दहेजप्रथा, निरक्षरता, छुआछुत, जातीवाद, भ्रष्टाचार आदि अनेक कुरुढ़ियों के प्रति भूमिका को वहन कर व्यक्तियों में उदारता, संवेदनशीलता, सहयोग आदि की भावना विकसित करनी होगी तभी **वसुधैव कुटुम्बकम्** सारा विश्व परिवार है **सर्वे भवन्तु सुखिनः** सारा विश्व सुखमय हो आदि वाक्य सफलीभूत हो सकेंगे।

सकारात्मक भाव दशा व्यक्ति को सफलताओं के शिखर पर चढ़ने में सहायता करती है। जीवन की खुशियों का आधार भी व्यक्ति की सकारात्मक भाव दशा ही होती है। सकारात्मक भाव प्रेम, समर्पण, सहयोग आदि को स्थान देते हैं। इच्छा संकल्प शक्ति, आत्म विश्वास, कार्ययोजना व कठिन परिश्रम से सफलता के सोपानों पर चढ़ते चले जाते हैं। शान्ति, संतुष्टि व तृप्ति का राज सकारात्मक सोच में ही निहित हैं। सकारात्मक सोच के साथ युवा समाज में विचारों की क्रांति का नेतृत्व कर भ्रष्टाचार को रोकने में सहयोगी बन सकते हैं। युवा शक्ति के वकील, डॉक्टर, राजनेता, प्रबंधन, विशेषज्ञ, तकनीकी ज्ञान में माहिर या फिर बेरोजगार विद्यार्थी आदि सभी संवेदनात्मक सहयोग प्रदान करें तो सर्वत्र शान्ति व्याप्त हो सकती है।

युवा वकील न्याय पूर्वक न्याय दिलाकर उत्पीड़ितों के ओठों पर मुस्कान ला सकते हैं, डॉक्टर कितनों की कराहटें दूर कर सकते हैं, कमजोर और आर्थिक दृष्टि से विपन्न लोगों को प्रबंधक सहायक बैंक बनाकर धन देकर आवश्यकता को पूर्ण कर सकते हैं। बेरोजगार किसी दुःखी रोते हुए को चुप करा सकते हैं। विद्यार्थी ज्ञान की साधना से अनगिनत निरक्षर एवं ज्ञान जिज्ञासुओं को ज्ञान दान दे सकते हैं। जिससे स्वतः ही शान्तिपूर्ण वातावरण निर्मित होगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी युवा शक्ति अपनी सहयोगात्मक भूमिकाएं दे सकती है वहाँ के युवाओं को उच्च शिक्षा, तकनीकी ज्ञान, शोध अनुसंधान के अवसर देकर गांवों का विकास, सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकते हैं। नशा उन्मूलन हेतु अभियानों का नेतृत्व भी युवा शक्ति को करना पड़ेगा क्योंकि वहीं इस अभियान को सफल बना सकते हैं। समाज में नैतिक मूल्यों के पतन के पीछे तथा बलात्कार आदि घटनाओं का एक प्रमुख कारण मादक पदार्थों का सेवन है। समाज में युवा शक्ति युवा संगठनों एवं परिषदों के माध्यम से अबाध रूप में विकासात्मक भूमिकाएं निभा सकते हैं और सामाजिक शान्ति में योगदान दे सकते हैं।

क्रमशः ....

सम्यक् ध्यान शतक

– मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

सम्दर्शन वा ज्ञान, व्रत, रत्नत्रय हैं जान।
संवेगरु वैराग्य भी, शुभ भावन पहिचान।।

❖

आत्म तत्त्व की भावना, एक भावना नेक।
शिवसुख की ये भावना, करे आत्म अभिषेक।।

आर्त्तध्यान

अर्त्तिभाव ही आर्त्त है, जिसका दुःख है नाम।
अशुभ बंध, होय दुर्गति, बिगड़ें धर्म सु–काम।।

इष्टवियोग

जहाँ नष्ट हों इष्ट वे, पदार्थ या हों दूर।
कहाँ मिलेंगे, खेद यह, इष्ट वियोगी पूर।।

अनिष्ट संयोग

जहाँ अनिष्ट पदार्थ के, हट जाने का भाव।
अनिष्ट संयोगी बने, मिलता नहीं स्वभाव।।

पीड़ा चिन्तवन

तन की पीड़ा होय जब, रोगादिक हों मान।
रोग–भूख आदिक मिटें, पीड़ा चिन्तन ध्यान।।

निदान

इन्द्रादिक की सम्पदा, इन्द्रिय के वे भोग।
आगे हमको प्राप्त हों, यही निदान प्रयोग।।

आर्त्तध्यान के गुणस्थान

प्रथम पाँच गुणथान तक, सभी आर्त्त हों ध्यान।
छठवे उस गुणथान में, बिन निदान त्रय मान।।

क्रमशः ....

जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा

डॉ. संजय जैन पथरिया

गतांक से आगे ....

विज्ञान की अपेक्षा भी इसकी मान्यता है किन्तु अभी इसके बारे में सम्पूर्ण रूप से आविष्कार नहीं हो पाया है। वैज्ञानिक न्यूटन के द्वारा आविष्कृत केन्द्राकर्षण शक्ति प्रायः अधर्मद्रव्य के समान है। वे स्वयं इस केन्द्राकर्षण शक्ति के मूर्तिक या अमूर्तिक होने के बारे में अनभिज्ञ थे। कोई यदि उनको उस शक्ति के विषय में पूछता था तब वे उत्तर देते थे कि मैं पूर्ण रूप से इसके बारे में नहीं जानता एवं इसके बारे में कहने के लिए अनेक समय चाहिए। प्रत्येक स्थिर कार्य के लिए निश्चित रूप से आकर्षण की सहायता की आवश्यक चाहिये किंतु यह शक्ति भौतिक या अभौतिक है इसका निर्णय में छोड़ देता है।

Let us now try to investigate the modern scientific equivalent of the principle of Adharma as we have proved in the foregoing pages, the luminiferous ether to be equivalent of Dharma Dravya, Apparently the cementing force in the world is what science calls 'GRAVITATION'

Although the law of gravitation has been styled the most extensive generalization which the human intellect has ever attained. Issac Newton, the discoverer of the law, did not quite understand it, In his 'Letter to Bentley' Newton wrote:

'You sometimes speak of gravity as essential and inherent to matter. Pray do not ascribe that notion to me : for the cause of gravity is what I do not pretend to know, and therefore would take more time to consider it.....

Gravity must be some agent action constantly according to certain laws; but this agent be material of non-material, I have left to the consideration of my readers.

धर्मद्रव्य एवं अधर्मद्रव्य की लोक के संगठन के लिये नितान्त आवश्यकता हैं। इन दोनों द्रव्यों के अभाव में लोक का आकार एवं स्थिरता एवं गतिशीलता नहीं हो सकती है। इन दोनों द्रव्यों से रहित लोक, सम्पूर्ण रूप से विश्रृंखल एवं नष्ट भ्रष्ट हो जायेगा। सम्पूर्ण विश्व अनंत आकाश में कहा विलीन हो जायेगा उसका कोई पता ही नहीं रहेगा। जिस प्रकार हाइड्रोजन से भरे गुब्बारे के फट जाने पर हाइड्रोजन यत्र-तत्र चला जाता है उसी प्रकार इन दोनों द्रव्यों से रहित गुब्बारा रूपी विश्व के द्रव्य भी यत्र-तत्र चले जायेंगे। इन द्रव्यों के विषय में ए.एन. चक्रवर्ती के शब्दों में -

The jain thinkers ask the question why the atoms should be kept together constituting the world of Maha Skandha? Why sould they not get dissipated throughout Anantakasa of infinite space? Then there would be no world. The very fact that structure of the world is permanent, that world is a cosmos and not a chaos implies the existence of another principal which guarantees the permanency of world's structure and world form. This principle has the function of being distinctly

inhibitive to arrest the flying atoms. This physical principal is called adharma or rest.?

जैन विचारकों ने युक्तियुक्त प्रश्न उठाया है कि परमाणु समूह क्यों परस्पर सम्मलित होकर इस विश्व रूपी महास्कंध में रहते हैं? वे क्यों नहीं अनंत अलोकाकाश में व्याप्त हो जाते हैं? यदि वे विस्तार को प्राप्त हो जायेंगे, तब विश्व एक नहीं रहेगा। यह निश्चित सिद्धांत है कि विश्व का एक निश्चित आकार है इसलिये लोक निश्चित आकार सहित है। इसीलिये इस विश्व के आकार को एवं पृथ्वी के आकार को निश्चित रखने के लिये दूसरे किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं है। इस पदार्थ का यह कार्य है कि दूर भागते हुए परमाणुओं को पृथ्वी के केन्द्र में बांधकर रखना है। इसका कार्य उड़ते हुए परमाणु को स्थिति देना है। इस भौतिक सिद्धांत को अधर्म द्रव्य अथवा स्थिति कहते हैं।

''दोनों धर्म तथा अधर्मद्रव्य सम्पूर्ण लोकाकाश केआकाश में व्याप्त हैं। वे स्वभावतः सम्पूर्ण रूप से अभौतिक, अपौद्गलिक एवं अमूर्तिक हैं। पुद्गल के गुण उनमें नहीं पाये जाते हैं। आकाश के प्रदेश भी उनके प्रदेश नहीं है'' वे दोनों वस्तुएं स्वतंत्र मौलिक वस्तु हैं। वे दोनों एक अनेक कहे जाते हैं। वे आकाशवर्ती- लेकिन आकाश लक्ष्ण से भिन्न हैं। वे अमूर्त एवं अरूपी हैं। वे हल्के अथवा भारी नहीं हैं। वे इन्द्रियों के विषय नहीं हैं। उनका आस्तित्व उनके कार्य से जाना जाता है। इसी प्रकार दोनों द्रव्यों के जो विशिष्ट गुण हैं, उनका वर्णन जैन दर्शन में है।

इसी प्रकार धर्म-अधर्म द्रव्यों के लक्षण, उदासीन रूप से गति हेतुत्व एवं स्थिति हेतुत्व हैं। यदि दोनों को मुख्य हेतु एवं प्रेरक हेतु मानेंगे तब जिसकी गति है उसकी गति ही होगी, उसकी स्थिति नहीं हो सकती है और जिसकी स्थिति है उसकी गति नहीं हो सकती है। किंतु एक ही जीव और पुद्गल की गति एवं स्थिति देखी जाती है। जब जीव-पुद्गल स्वयं ठहरते हैं एवं इच्छापूर्वक गमन करते हैं उस समय में धर्म द्रव्य गमन कराने में बाध्य नहीं करता है। एवं अधर्म द्रव्य स्थिति कराने को बाध्य नहीं करता है। यदि धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य गति एवं स्थिति कराने को बाध्य कराते तब जीव-पुद्गल एवं धर्म-अधर्म में संघर्ष होने लगता, किंतु उस समय सघर्ष नहीं होता है। अतः सिद्ध होता है कि वे उदासीन कारण हैं।

(3) समस्त द्रव्यों को स्थान देने वाला आकाश द्रव्य

आकाश एक अमूर्तिक, शाश्वतिक, अनादिनिधन, संकोच विस्तार से रहित, सर्वव्यापक, अनंतानंत, प्रदेशात्मक, सीमा रहित, निष्क्रिय द्रव्य है। सर्व द्रव्यों को अवकाश प्रदान करना इस द्रव्य का विशेष गुण है। इसे अवकाश प्रदान करने वाले विशेष गुण के कारण अन्य पांचों द्रव्यों का आधार आकाश है। अन्य सर्व द्रव्यों से अत्यन्त वृहत् होने के कारण तथा सर्वव्यापक होने के कारण अन्य द्रव्य आकाश का आधार नहीं हो सकता है जबकि अन्य द्रव्यों का आधार आकाश होता है। आकाश स्वयं ही आधार होता है इसीलिये आकाश स्वयं आधार आधेय है। जितने प्रदेशों में आकाश ने अन्य द्रव्यों को अवकाश दिया है अर्थात् जितने आकाश प्रदेश में अन्य द्रव्य स्थित हैं उसको लोकाकाश कहते हैं। यह लोकाकाश असंख्यात प्रदेशों वाला सीमित क्षेत्र है। अलोकाकाश, जो अन्य द्रव्यों से रहित है अनंत दूरी

पर्यन्त मात्र आकाश ही आकाश है। उसका प्रदेश अनंतानंत है। वस्तुतः लोकाकाश और अलोकाकाश दो द्रव्य नहीं, बल्कि एक अखण्ड द्रव्य के दो अंशमात्र हैं। यह लोक और अलोक का विभाग अर्थात् स्थापना भी अनादि से अकृत्रिम भाव से हुई है। इस लोक अलोक की सीमा में वृद्धि ह्रास न होने का मुख्य कारण गति हेतुत्व वाले धर्म द्रव्य एवं स्थिति हेतुत्व वाले अधर्मद्रव्य का अवस्थान है। धर्मद्रव्य तथा अधर्मद्रव्य अमूर्तिक, निष्क्रिय लोकाकाश व्यापी असंख्यात प्रदेशी, अखण्ड द्रव्य होने के कारण लोकाकाश में स्थिति कोई भी द्रव्य अलोकाकाश में नहीं जा सकती है। गतिशील जीव पुद्गल बिना धर्मद्रव्य की सहायता से आकाश में गति नहीं कर सकते हैं। आकाश को गति एवं स्थिति का कारण नहीं मान सकते हैं। जैसा कि आचार्यों ने कहा है :-

आगासं अवगासं गमणट्ठिदि कारणेहिं देदि जदि।
उड्ढंगदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठति किध तत्थ ।।

यदि आकाश द्रव्य, चलन और स्थिरता के कारण धर्म और अधर्म द्रव्य के गुण के साथ-साथ अवकाश देता है तब ऊर्ध्वगति वाले, अप्रतिहत, अनन्त शक्ति वाले, प्रसिद्ध जीव लोकाग्र में स्थिर क्यों हो जाते हैं? इससे सिद्ध होता है कि अप्रतिहत शक्ति वाले सिद्ध जीव बिना धर्म द्रव्य के माध्यम से आलोक में नहीं जाते हैं। तब अन्य द्रव्य कैसे गति कर सकते हैं? लोकाग्र में सिद्धों के कारण सिद्ध हुआ है कि स्थिति हेतुत्व भी आकाश का गुण नहीं है। वह तो अधर्म द्रव्य का गुण है। अलोकाकाश में अधर्मद्रव्य के अभाव से भी यदि वहाँ द्रव्य माना जाय तो उसकी स्थिति कैसे हो सकती है? यदि आकाश को गति स्थिति हेतुत्व मानेंगे तब अलोक-हानि एवं लोक-वृद्धि का प्रसंग आयेगा।

जदि हवदि गमणहेदू आगामं ठाणकारणं तेसिं।
पसजदि अलोगहाणी लोगस्स य अंत परिबुड्ढी ।।

यदि आकाश द्रव्य, उन जीव-पुद्गलों को गमन करने में सहकारी कारण हो तो अलोक हानि का प्रसंग आ जायेगा और लोक के अन्त की वृद्धि हो जायेगी। इसी प्रकार वृद्धि होती जाये तब लोकाकाश असंख्यात प्रदेश परिणाम वाले धर्म-अधर्म द्रव्य से अधिक हो जायेगा एवं कालक्रम से अलोकाकाश का अभाव हो जायेगा। वस्तुतः अनन्त आकाश होने पर भी लोकाकाश सीमित है। विज्ञान की अपेक्षा भी लोकाकाश सीमित माना गया है। यथा :-

Strangely enough the mathematicians reckon that the total amount of matter which exists is limited and that the total extent of the universe is finite. They do not conceive that there is a limit beyond which no space exists but time would come back to its starting point. They have even made a preliminary estimate of the time a ray of light would require for the round trip in the totality of curvature not less than ten trillion, i.e., 10^{19} years. And such a space is very close quarters compared with infinity. A mathematician feels positively cramped in it. [1]

क्रमशः ....

स्वास्थ्यप्रद आहार : अहिंसक आहार

डॉ. बी.एल. बजाज

''जीवन के लिए आहार'' की आवश्यकता की पूर्ति खाये जाने वाले आहार से भी बढ़कर, निरंतर श्वांस द्वारा ली जाने वाली हवा व पीये जाने वाले पानी से होती है। श्वांस के बिना कुछ मिनट व पानी के बिना कुछ दिन से अधिक जी पाना संभव नहीं है। हवा-पानी जितने प्राकृतिक रूप से शुद्ध होंगे, स्वास्थ्य के लिए उतने ही उत्तम होंगे। हवा और पानी के संबंध में शाकाहार या अन्यथा का कोई विवाद नहीं है। खाए-पीये जाने वाले आहार का वनस्पति-जन्य होना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

जहाँ प्राणी मात्र अपनी नैसर्गिक प्रवृत्ति से प्रेरित हो, अपने लिए प्रकृति-प्रदत्त प्राकृतिक भोजन जीवन-यापन के लिए करते हैं, वहीं आदमी न अपनी नैसर्गिक प्रवृत्ति की सुनता है, न ही उस पर ध्यान देता है। 'भोजन के लिए जीवन' को मान, अज्ञान व भ्रान्तियोंवश जिह्वा की स्वादलोलुपता के वशीभूत वह हो जाता है तथा अपने लिए बने प्राकृतिक आहार-शाकाहार की छोड़ अंडाहार, मांसाहार जैसे अखाद्य व अप्राकृतिक आहार ग्रहण करना शुरू कर अपने स्वास्थ्य-नाश को खुला निमंत्रण दे देता है।

स्वास्थ्य और शाकाहार का एक अटूट शाश्वत संबंध है। एक के बिना दूसरे की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। स्वस्थ व्यक्ति शाकाहारी ही होगा और शाकाहार के बिना स्वास्थ्य संभव नहीं। स्वस्थ व्यक्ति हम किसे समझते है? प्राचीनतम हिन्दू दर्शन व आयुर्वेद के अनुसार 'स्वयं में स्थित', (आत्मा से एकाकार) यानि कि समग्र रूप से द्वन्द्व रहित, कर्मशील, करुणामय, प्रेममय, शांत व संतुलित व्यक्ति ही स्वस्थ है।

अंग्रेजी भाषा के शब्द 'हेल्थ' की उत्पत्ति 'हील' (व्याधि मुक्त होना) से होने से 'स्वास्थ्य' की उपरोक्त व्यापक धारणा को संप्रेषित करने में यह समर्थ नहीं है। शायद इसी कमी को पूरा करने को 'हेल्थ' को परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस हुई। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार (हेल्थ) स्वास्थ्य से अभिप्राय मात्र शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं है, परन्तु मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक व सामाजिक स्वास्थ्य भी है। शाकाहार से सीधा-सरल अभिप्राय ऐसे आहार से है जो वनस्पति जगत से अन्न, सब्जी, फल इत्यादि के रूप में प्राप्त होता है।

इन परिभाषाओं के संदर्भ में यह बहुत स्पष्ट है कि जीवन यापन के लिए न्यूनतम अत्यावश्यक जीव-ह्रास (वनस्पति एकेन्द्रिय जीव है, तथा फल इत्यादि तो पकने पर पेड़ द्वारा स्वतः त्याग दिये जाते हैं) से अधिक किसी बहु-इन्द्रिय जीव तथा पशु-पक्षी की हत्या कर हम भावनात्मक रूप से करुणामय,

प्रेममय व संतुलित नहीं रह सकते हैं। यानि मांसाहारी होकर हम समग्र रूप से स्वस्थ होने की सोच ही नहीं सकते। समग्र रूप से स्वस्थ व्यक्ति जो भावनात्मक रूप से भी स्वस्थ है मांसाहार की कल्पना भी नहीं कर सकता है। जीव मात्र के जीने के अधिकार का गला घोंट कर हम संवेदनशील नहीं रह सकते और संवेदनशीलता के अभाव में भावानात्मक व सामाजिक स्वास्थ्य असंभव है। जहाँ करुणा, दया व अहिंसा की भावना सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध बनने को प्रेरित कर देती है वहीं आज अमेरिका व अन्य मांसाहारी देशों में बढ़ती हिंसा के तान्डव के पीछे शोध से जो बात सामने आई हैं वह चौंका देने वाली है। अमेरिका के बच्चों द्वारा अपने मां-बाप, गुरुजनों व साथियों की छोटी-छोटी बात पर हिंसा कर देने के पीछे उनकी मांसाहार की वजह से बढ़ती संवेदनहीनता ही है।

निर्ल्लजता, निर्ममता व निर्दयता की सभी सीमाओं को लांघ कर ही मनुष्य दूसरे जीवों की हत्या को अग्रसर हो सकता है। आदमी द्वारा आदमी को मार कर खा जाने के भी कभी कभार कुछ आदिम-जातियों के या सिरफिरे व्यक्तियों के दृष्टांत मिल जाते हैं। तो क्या आम मांसाहारी यदि उसका वश चले तो , नर-भक्षी भी होने से नहीं चूकेगा? यदि संवेदनशीलता व आत्मा थोड़ी भी जगी हुई है तो वह ऐसा सोच भी नहीं पाएगा। तब उस थोड़ी सी जगी आत्मा एवम् थोड़ी सी शेष संवेदनशीलता को क्यों नहीं और जगा/बढ़ा कर, अन्य जीवों की हत्या से मुंह मोड़कर, मांसाहार, अंडाहार इत्यादि को आदमी, आदमियत के नाम पर तिलांजलि दे देता है। अन्यथा आदमियत के इस कलंक हेतु प्रभु व प्रकृति उसे कभी क्षमा नहीं करेगी। कर्म-फल से कोई बच नहीं सकता है। अपनी प्रकृति के प्रतिकूल आहार-विहार के दुष्परिणाम तो हर किसी को भुगतने ही पड़ते हैं। प्रकृति-प्रतिकूल आहार करने के परिणामों की पराकाष्ठा इंग्लैण्ड में गायों को जो शाकाहारी प्राणी है, मांसाहार कराने से कुछ वर्षों पूर्व सामने आई। 'मेड काउ डिजीज' नाम से दिल दहला देने वाली बीमारी से वहाँ की गायें ग्रसित हो गई थीं तथा उनसे प्राप्त संक्रमणित मांस से मांसाहारियों को आशंकित खतरे के मद्देनजर इंग्लैण्ड को तब लाखों गायों का निर्ममता से संहार करना पड़ा था। 'बर्ड-फ्लू' का खतरा भी संक्रमित मांस-सेवन करने वालों को ही मूलतः रहा है।

सब धर्मों के मूल 'अहिंसा' की प्राप्ति शाकाहार से ही संभव है। अहिंसा के बिना किसी भी धर्म की धार्मिकता विडंबना व छलावा ही प्रतीत होती है। अहिंसा व अन्य मानवीय उद्दात् मूल्यों से मानसिक उत्कृष्टता, भावनात्मक संतुलन, आध्यात्मिक प्रकाश व सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त हो आदमी का समग्र रूपेण स्वास्थ्य सुनिश्चित होता है। शाकाहार से शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य भी मांसाहारियों व अंडाहारियों की तुलना में निम्न कारणों से बेहतर होता है।

साभार-अहिंसकाहार, अहिंसकाहार शोधकेन्द्र, जयपुर

क्रमशः...........

अहिंसक आहार : जैन दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. पी.सी. जैन

जैनागम में अहिंसा दर्शन या अहिंसा सिद्धांत का गम्भीरता और विशदता से विवेचन किया गया है। इस संदर्भ में भक्ष्याभक्ष्य पर विचार करने के क्रम में मांसभक्षण का समग्रतः परिवर्जन और अन्नाहार, फलाहार तथा शाकाहार का सबल समर्थन किया गया है। यद्यपि शाकाहार शब्द का प्रत्यक्ष प्रयोग प्राचीन जैनशास्त्र में उपलब्ध नहीं होता वहाँ पर अन्नाहार ही शुद्ध भोजन है। शुद्ध भोजन भी परिमित मात्रा में ही ग्राह्य है। आचार्य आशाधर 13वीं शती के सागारधर्मामृत में उल्लेख है कि सुबह और शाम उतना ही भोजन लेना चाहिए जितना जठराग्नि सुगमता से पचा सके। गरिष्ठ पदार्थों को भूख से आधा और हल्के पदार्थों को तृप्ति-पर्यन्त ही खाना चाहिए। भोजन की मात्रा का यही परिमाण है या आहार का परिमाण अथवा परिमाण सम्बन्धी यही नियम है। दिगम्बर सम्प्रदाय के आ. कुन्दकुन्द के समकालीन या उनके परवर्ती आचार्य स्वामी वट्टकेर के मूलाचार में आहार की मात्रा के संबध में निर्देश है कि उदर के चार भागों में दो भाग व्यंजन-सहित भोजन से भरें, तीसरा भाग जल से परिपूर्ण करें और चौथे भाग को वायु संचार के लिए खाली छोड़ें।

जो व्यक्ति भक्ष्याभक्ष्य का विवेक रखते हैं, वे मांसाहार को स्वीकार न कर अन्नाहार या अहिंसक आहार को महत्व देते हैं। जैनदृष्टि में निरामिष भोजन ही शाकाहार नहीं है, वरन् शाकाहार में भी जितनी सचित्त या सजीव वस्तुएँ हैं, त्याज्य हैं मद्य, मांस, मधु (शहद) का उत्पादन या (अमर्यादित)नवनीत (मक्खन) हिंसाश्रित तो होता ही है, मद और प्रमाद का उत्पादक होने के कारण ये महा हिंसक होने के साथ विकृतिमूलक भी हैं, इसलिए अभक्ष्य हैं। इनके अतिरिक्त पांच प्रकार के उदुम्बर या गूलर जाति के फल (बड़, पीपल, गूलर, पाकर और कठूमर और फिर कंद, मूल, पत्र-पुष्प जाति की वनस्पतियाँ भी क्षुद्र) त्रस जीवों या सूक्ष्म कीटाणुओं की पिण्ड होने के कारण हिंसा का स्थान या अनन्त कायिक होने के कारण अभक्ष्य हैं। इसी प्रकार बासी, रसचतिलकित, फफूंदवाली, स्वास्थ्य बाधक, अमर्यादित, सन्दिग्ध और अशोधित-ये सभी प्रकार की वस्तुएं भी अभक्ष्य हैं। पुनः दाल के साथ छांछ दही, मिलाकर विदल पदार्थ खाना भी वर्जित है। इसलिए सर्वथा शुद्ध जल अन्न, जल आदि का ग्रहण करना ही जैन दृष्टि में उचित है।

जैन दृष्टि से सन्धान-द्रव्य, जैसे आचार, मुरब्बे, जेली, जैम आदि भी अभक्ष्य हैं, क्योंकि ये नित्य ही त्रस जीवों से संसिक्त रहते है । यदि हम जैनाचार की दृष्टि से देखें तो जिसे हम सामान्यतया शाकाहार कहते हैं, वे कीटाणु युक्त हैं, उनके भोजन से हमें हिंसा दोष से ग्रस्त होना पड़ता है।

क्रमशः...........

व्यवहारिक जीवन में अहिंसा के सूक्ष्म रूपों का प्रचलन

डॉ. वीरसागर जैन

बड़े ही आश्चर्य की बात है कि आज समय बहुत बदल गया है, फिर भी जैन समुदाय में अहिंसा के अनेक सूक्ष्म रूप प्रचलन में पाए जाते हैं, जो प्रशंसनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी हैं। यद्यपि हम मानते हैं कि ये रूप सदा और सर्वत्र नहीं पाये जाते हैं, परन्तु क्वचित्-कदाचित् ही सही, आज की विषम परिस्थितियों में जीवित हैं-यही क्या कम है? हमें आशा है कि इनके ज्ञान और अनुकरण से जनता का महान हित होगा, अतः इनमें से कतिपय रूपों को यहाँ संगृहीत किया जाता है। अहिंसा के ये सूक्ष्म रूप न केवल धार्मिक, आध्यात्मिक दृष्टि से ही उचित सिद्ध होते है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि अनेक दृष्टियों से भी बड़े लाभकारी सिद्ध होते हैं। यहां तक की पर्यावरण-प्रदूषण आदि अनेक गंभीर समस्याओं का सहज समाधान प्रस्तुत करते हैं।

1. दीपक को मुँह से फूँक देकर नहीं बुझाया जाता है, क्योंकि इससे अग्निकायिक और वायुकायिक जीवों की हिंसा होती है।
2. फल-सब्जी को 'काटो' शब्द से नहीं बोला जाता, क्योंकि इस शब्द से हिंसा की गंध आती है।
3. गर्म पानी में ठण्डा और ठण्डे पानी में गर्म पानी नहीं मिलाया जाता है। इसी प्रकार गर्मागर्म पानी नाली में नहीं बहाया जाता और साबुन का पानी शौचालय में नहीं डाला जाता है।
4. अनाज-दाल-चावलादि को साफ करते समय कोई कीड़ा निकले तो उसे धूप में या यूँ ही सड़क पर कहीं भी नहीं डाल दिया जाता है।
5. रात्रिभोजन नहीं किया जाता और कराया भी नहीं जाता है। रात्रि में भोजन बनाया भी नहीं जाता है। रात्रि का बना हुआ भोजन दिन में खाया भी नहीं जाता है।
6. जमींकन्द का सेवन नहीं किया जाता है, विवाह आदि की पार्टी में भी।
7. शहद का सेवन नहीं किया जाता है, दवाई तक में भी नहीं।
8. मद्य-माँसादि का सेवन तो दूर, इनका नाम भी लेना ठीक नहीं समझा जाता है, खासकर भोजन के समय तो कदापि नहीं।
9. पीने के लिए ही नहीं, स्नानादि के लिए भी पानी को छानकर ही काम में लिया जाता है।
10. पशु-पक्षी के आकार की मिठाई (Toffees) नहीं खाई-खिलाई जाती है। खाने की किसी भी वस्तु में ऐसी कल्पना भी नहीं की जाती है।
11. चाँदी का वर्क लगी हुई मिठाई नहीं खाई जाती है।
12. चार दिन से अधिक का आटा, मसाले, आचार आदि इस्तेमाल नहीं किये जाते है।
13. बासी भोजन नहीं किया जाता है।
14. मक्खन, ब्रेड, बिस्कुट इत्यादि का उपभोग नहीं किया जाता है।
15. बैगन, गोभी आदि सब्जियों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

16. पानी की एक बूँद भी व्यर्थ नहीं गिराई जाती। पाईप से कार की धुलाई आदि बहानों से अनाप-सनाप पानी फैलाना तो बहुत दूर की बात है।
17. अनाथ गरीब और याचक को भी अभक्ष्य वस्तु नहीं दी जाती है।
18. विवाहादि भी दिन में ही सम्पन्न करने का प्रयत्न किया जाता है।
19. वृक्षों में पत्र, पुष्प आदि नहीं तोड़े जाते। हरी घास पर चलना तक वर्जित माना जाता है।
20. मच्छर और जूँ आदि को भी नहीं मारा जाता है।
21. चित्रात्मक जीव की भी हिंसा नहीं की जाती है।
22. मन्दिर में भगवान के आगे फल-फूल आदि नहीं चढ़ाए जाते, मात्र चावल का प्रासुक वस्तुएँ चढ़ाई जाती है।
23. मन्दिरों में रात्रि के समय घण्टा नहीं बजाया जाता, क्योंकि इससे भी अनेक सूक्ष्म जीवों को पीड़ा होती है।
24. कहीं-कहीं तो मन्दिरों में पंखे तक नहीं चलाए जाते, क्योंकि इससे वायुकायिक जीवों की हिंसा होती है।
25. प्रमादवश हिंसा होने पर प्रायश्चित लिया जाता है।
26. बीड़ी-सिगरेट, पान मसाला, गुटका आदि नशाकारक वस्तुओं का सेवन तो दूर, उनका व्यापार भी नहीं किया जाता। इसी प्रकार किसी भी हिंसक वस्तु का व्यापार नहीं किया जाता है।
27. किसी के पुतले नहीं जलाये जाते। लोग उन्हें देखने तक भी नहीं जाते, क्योंकि इससे भी हिंसा की अनुमोदना होती है।
28. रेशमी वस्त्रों (साड़ी आदि) का प्रयोग नहीं किया जाता, क्योंकि इनके निर्माण में असंख्य कीटों की हिंसा होती है।
29. हिंसा से उत्पन्न सौन्दर्य-प्रसाधनों का उपयोग नहीं किया जाता है।
30. पटाखे नहीं चलाए जाते, क्योंकि अग्नि, वायु और त्रस काय की हिंसा और भारी अपव्यय व अनर्थदण्ड होता है।
31. ताजा दूध को शीघ्र गर्म किया जाता है, उसमें देर नहीं लगाई जाती, क्योंकि अन्तर्मुहूर्त के बाद उसमें सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है।
32. चमड़े की किसी भी वस्तु - जूते, चप्पल, पर्स, बेल्ट, बैग आदि का उपयोग नहीं किया जाता है। चूहे, कोकरोच, मक्खी आदि को विषैली दवाइयां डालकर नहीं मारा जाता है।
33. सप्ताह में एक दिन (अष्टमी-चतुर्दशी को) साबुन का प्रयोग नहीं किया जाता। हरी सब्जी का सेवन भी नहीं किया जाता है।
34. जिस पर तितली, चूहा, चिड़िया आदि का चित्र छपा हो-ऐसी चप्पल या मेट आदि किसी भी चीज पर पैर नहीं रखा जाता है।

मन, प्रबन्ध और ध्यान

विभिन्न दर्शनों व विज्ञान के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. संजय जैन, पथरिया

मन, प्रबन्ध और ध्यान विभिन्न दर्शनों के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन जो कि एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि मन, प्रबन्ध और ध्यान के बिना हम इस अमूल्य मानव जीवन की सार्थकता की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

अभी तक मन, प्रबन्ध और ध्यान के ऊपर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। कुछ लघु शोध-पत्र या छुटपुट लेख जरूर प्रकाशित हुये हैं। इनके विषय की गहनता को देखते हुये इस पर शोध कार्य की महती आवश्यकता है। यह विषय जैन दर्शन एवं अन्य दर्शनों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जैन दर्शन में मन एक अभ्यन्तर इन्द्रिय है। ये दो प्रकार की हैं - द्रव्य व भाव। हृदय स्थान में अष्टपांखुडी के कमल के आकार रूप पुद्गलों की रचना विशेष द्रव्य मन है। चक्षु आदि इन्द्रियोंवत् अपने विषय में निमित्त होने पर भी अप्रत्यक्ष व अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण इसे इन्द्रिय न कहकर अनिन्द्रिय या ईषत् इन्द्रिय कहा जाता है। संकल्प-विकल्पात्मक परिणाम तथा विचार चिन्तवन आदिरूप ज्ञान की अवस्था विशेष भाव मन है।

मन इन्द्रिय को सहायता करता है उसी मन के द्वारा क्रमशः विशेष ज्ञान और क्रिया होती है तथा जिसके द्वारा देखे सुने गये पदार्थों का स्मरण होकर हेय उपादय का ज्ञान होता है वह मन है।

वैशेषिक मत का कहना है मन एक स्वतंत्र द्रव्य है। वह रूप आदिरूप परिणमन से रहित है और अणु मात्र है।

बौद्ध मत का कहना है कि विज्ञान ही मन है और इसके अतिरिक्त कोई पौद्गलिक मन नहीं है।

सांख्य मत का कहना है कि प्रधान का विकार ही मन है और इसके अतिरिक्त कोई पौद्गलिक मन नहीं है।

शंकराचार्य के अनुसार कर्म से केवल मन की ही शुद्धि होती है। तत्त्व वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती। इसका मुख्य उपाय ध्यान है।

स्वामी शिवानंद के अनुसार ध्यान ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र राज है।

चिन्तन की एकाग्रता को ध्यान कहते हैं। अपने ध्येय में लीन हो जाना, स्वयं के चेतन स्वरूप में रम जाना ध्यान है।

मन का ध्यान से घनिष्ठ सम्बंध है। किसी एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करना ध्यान है। एकाग्रचिन्तानिरोध का अर्थ है एक ही अग्र अर्थात् मुख या विषय में चिन्ता को रोक देना।

अन्य मतों में जो **ध्यानं निर्विषयं** मन ऐसी मान्यता है, उसका निरसन करने हेतु जैनमत की अवधारणा है कि ध्यान का एक विषय मन और एक विषयभूत मन की परिणति ध्यान है। किसी एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करना ध्यान है। मन के विकार से अशुभ ध्यान अपध्यान, मन की पवित्रता से प्रशस्त ध्यान की सिद्धि, मन की एकाग्रता के अभाव ध्यान में बाधाएं, पवित्र चिन्तन से चिन्ताओं विकल्पों से मुक्ति; इस प्रकार मन की विभिन्न अवस्थाएँ हमारे ध्यान में बाधक व साधक बनती हैं। जैन दर्शन में तो ध्यान का लक्षण-एकाग्र चिन्ता निरोध-किसी पदार्थ या विषय में स्थिर होना ध्यान है। अब वह ध्यान किस कोटि का है यह मन की शुद्धि और विशुद्धि पर निर्भर करता है।

वस्तुतः जैन परम्परा ध्यान-योग साधना की मूल भित्ति पर आधारित है। इसका सबसे सबल प्रमाण है जैन तीर्थंकरों आदि की ध्यानस्थ मुद्रा। सभी गहरे ध्यान में डूबी हुईं प्रशांत मुखमुद्राएँ नासाग्रदृष्टि एवं वीतरागता के भाव से ओत-प्रोत मिलेंगी इनके अतिरिक्त नहीं। क्योंकि संस्कृति का मूल उद्देश्य ही ध्यान-योग साधना है। अन्य धर्म परम्पराओं में भी यदि ध्यान-योग-साधना के तत्त्व हैं तो वे जैन संस्कृति के प्रभाव से हैं।

आधुनिक मनोविज्ञान मन के अस्तित्व को नहीं मानता बल्कि उसके स्थान पर स्मृति, विचार, साहचर्य आदि मानसिक वृत्तियों को तो स्वीकार करता है, जबकि भारतीय मनोविज्ञान में विशेष अध्ययन का विषय यह रहा है कि मन की शक्ति को कैसे बढ़ाया जाये, शारीरिक कार्यों, भावों और आवेगों को कैसे संयमित किया जावे। मन; तत्त्व का मनन करता है और चित्त या बुद्धि उसे ग्रहण करता है।

मन, प्रबन्ध और ध्यान का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है इसके बिना हम अपने सर्वांगींण विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

व्यवहारिक जीवन में हमारा समस्त जीवन विकास, जन्म, लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, पढ़ाई-लिखाई, रोजगार-व्यापार, आवागमन, स्वास्थ्य, मानसिक शांति आदि सब-कुछ हमारे मन, प्रबन्ध और ध्यान पर ही निर्भर करते हैं।

क्रमशः ....

कीर्ति नगर जयपुर की कीर्ति सारे भारत में फैली

पूर्व प्रभावना के अनन्तर 2 अक्टूबर 2010 को कीर्ति नगर के जैन भवन की छत पर बने पण्डाल में विद्यासागर प्रवचन मंच से भव्य जैन कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ। प्रातः स्थानीय बच्चों, महिलाओं व पुरुषों द्वारा कविताएं प्रस्तुत की गईं। अन्त में एवं मध्यान्ह में दूर-सुदूर से पधारे कवियों की कविताएं प्रस्तुति के उपरान्त मुनिश्री ने अपनी स्व-रचित कविताएं पढ़ीं। इन शिक्षाप्रद कविताओं से स्वजनों को अपार आनंद हुआ।

रात्रिकालीन कवि सम्मेलन में देहली, भोपाल, कोटा आदि से आये कवियों ने राजनेताओं की उपस्थिति में जैन धर्म और देशोन्नति पर आधारित कविताओं को गाकर कीर्तिनगर नगर क्या सारे आकाश को तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान करवाया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नरेन्द्र जैन, भोपाल ने किया।

3 अक्टूबर 2010 को मुनिश्री के आशीर्वाद व प्रेरणा से चल रही राजस्थान की धार्मिक पाठशालाओं एवं उनकी शिक्षक, शिक्षिकाओं का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। तीन सत्रों में बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षक, शिक्षिकाओं को मार्गदर्शन (कोर्स इत्यादि के रूप में) एवं मुनि का मंगल उद्‌बोधन हुआ। सभी बच्चों व पढ़ाने वालों को पुरस्कारित कर सामाजिक लोगों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अजित जैन, भोपाल एवं श्रीमती पूनम जैन, कीर्तिनगर ने किया।

मुनिश्री ने दिनांक 8 अक्टूबर, 2010 को कीर्तिनगर जैन मंदिर से दुर्गापुरा जैन मंदिर के लिये विहार किया तथा महावीर नगर, गायत्री नगर, थड़ी मार्केट, हीरापथ, वरुण पथ होते हुये मुनिश्री का दिनांक 16 अक्टूबर, 2010 को एस.एफ.एस. कालोनी एवं जैन मंदिर में मंगल प्रवास हुआ।

मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में मोहन वाटिका, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर (एस.एफ.एस. मानसरोवर जैन मंदिर) में समवसरण महामण्डल महायज्ञ विधान का भव्य आयोजन दिनांक 17 से 24 अक्टूबर, 2010 तक किया गया।

समवसरण महामण्डल महायज्ञ का ध्वजारोहण समाजसेवी श्री ओम कासलीवाल एवं उनके परिवार द्वारा किया गया। दीप प्रज्ज्वलन समाजसेवी श्री कमल काला एवं उनके परिवार द्वारा किया गया। समवसरण महामण्डल महायज्ञ का उद्‌घाटन समाजसेवी श्री श्रीपाल जी कटारिया एवं उनके परिवार द्वारा किया गया। श्री अरुण काला ''मटरू'' ने प्रथम दिन की शांतिधारा की तथा श्रावक श्रेष्ठी श्री ओम प्रकाशजी संजयकुमार जी बाकलीवाल थे।

इस विधान में करीब 1500 इन्द्र-इन्द्राणी बैठे। महायज्ञ में बैठने वाले सभी इन्द्र-इन्द्राणियों को धोती-दुपट्टे, साड़ी, माला, मुकुट आदि वितरित किये गये। समवसरण महामण्डल महायज्ञ विधान में प्रतिदिन मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के मंगल प्रवचन हुये। प्रतिदिन श्रावक श्रेष्ठी द्वारा मंगल प्रवचन के दौरान मुनिश्री से प्रश्न, महायज्ञ में बैठे जन समूह के समक्ष पूछे गये जिनका समाधान एवं जवाब मुनिश्री द्वारा दिया गया। श्रावक श्रेष्ठी एवं उनके परिवार द्वारा शाम को मुनिश्री की आरती की गयी। आरती के पश्चात् बैण्डबाजों के साथ बग्गी में बैठकर श्रावक श्रेष्ठी समवसरण की महाआरती के लिये आये एवं साजों द्वारा धूमधाम से महाआरती की गयी एवं पंडित जी के प्रवचन हुये। प्रतिदिन सायं को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। कीर्तिनगर जैन मंदिर में प्रारम्भ की गयी पाठशाला के बच्चों एवं समाज का भी दिनांक 23 अक्टूबर, 2010 को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका का संशोधन दिनांक 18 से 21 अक्टूबर, 2010 में श्रीमज्जिनेन्द्र समवशरण महामंडल विधान के पावन अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रबन्धकारिणी समिति कीर्तिनगर, जयपुर के द्वारा आयोजित किया गया जिसके संयोजन का दायित्व डॉ. शीतलचंद जी जयपुर को सौंपा गया।

संगोष्ठी में आमंत्रित विद्वान (1) डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत (2) डॉ. शीतल चंद जैन, जयपुर (3) पं. शिवचरण लाल जैन, मैनपुरी (4) ब्र. जय कुमार जैन निशांत, टीकमगढ़ (5) पं. महेश शास्त्री (6) डॉ. पुलक शास्त्री (7) ब्र. राजेन्द्र जैन, सांगानेर (8) ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर (9) पं. विनोद जैन, रजवांस (10) डॉ. सुधीर जैन, भोपाल (11) डॉ. संजय जैन, पथरिया को आमंत्रित किया गया।

दिनांक 24 अक्टूबर, 2010 को समवसरण में बैठे इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा महायज्ञ किया गया। मुनिश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् इन्द्र-इन्द्राणियों को हाथियों, बग्गीयों में बिठाकर मानसरोवर की विभिन्न कालोनियों में होते हुये रथ यात्रा वापिस मोहन वाटिका कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। तत्पश्चात् विधान में हुई बचत से कीर्तिनगर जैन भवन की तीसरी मंजिल पर लगभग 110 फीट लम्बे लगभग 50 फीट चौड़े "आर्जवसागर सभागार" निर्माण के शिलापट्ट का अनावरण किया गया। अन्त में मुनिश्री का मांगलिक प्रवचन एवं सामूहिक भोजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मुनिश्री ने एस.एफ.एस. जैन मंदिर से दिनांक 26 अक्टूबर, 2010 को कीर्तिनगर, जैन मंदिर के लिये विहार किया। मुनिश्री से आशीर्वाद लेकर करीब 60 श्रावक-श्राविकाएं दिनांक 26 अक्टूबर, 2010 को आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ के दर्शन के लिये श्री कैलाश चन्द जी, मनोज कुमार जी छाबड़ा के सहयोग से शाम को सागर के लिये रवाना हुए। दिनांक 27 अक्टूबर, 2010 को बीना-

बारह में विराजमान आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज की श्रावक-श्राविकाओं ने पूजा-अर्चना की तथा मुनिश्री से प्राप्त शास्त्र आचार्यश्री को भेंट किये एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। दिन में करीब 1.30 बजे श्रावक-श्राविकाएं रहली-पटना, गढ़ाकोटा, पथरिया आदि विभिन्न मंदिरों के दर्शन करते हुए कुण्डलपुर के लिये रवाना हुए एवं रात्रि करीब 8.00 बजे कुण्डलपुर पहुंचे। सुबह कुण्डलपुर में श्रावक-श्राविकाओं ने भक्तामर विधान की पूजन की। कुछ लोग मुनि श्री क्षमासागर जी दर्शनार्थ भी शाहपुर पहुँचे। अन्य लोग शाम को कुंडलपुर में महाआरती करने के पश्चात्, श्रावक-श्राविकाओं ने दमोह के विभिन्न ऐतिहासिक भव्य मंदिरों के दर्शन किए। दिनांक 29 अक्टूबर 2010 को सभी श्रावक-श्राविकाएं जयपुर आ गए।

दिनांक 6 नवम्बर 2010 को मुनिश्री के सान्निध्य में निर्वाण महोत्सव मनाया गया तथा चातुर्मास निष्ठापन हुआ। उसके पश्चात् चातुर्मास हेतु बनायी गयी विभिन्न समितियों के संयोजकों-सदस्यों का सम्मान किया गया।

दिनांक 7 नवम्बर 2010 को पिच्छिका परिवर्तन हुआ। मुनिश्री की पिच्छी प्राप्त करने का सौभाग्य श्री अरुण जैन एवं श्रीमती शैलबाला जैन को प्राप्त हुआ जबकि क्षुल्लक श्री 105 हर्षितसागर जी महाराज की पिच्छी लेने का सौभाग्य श्री पारस सौगानी एवं श्रीमती अनिता सौगानी को प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् कंठपाठ प्रतियोगिता में पुरस्कृत बालक, बालिकाएं, महिलाएं एवं पुरुषों को सम्मानित किया गया। मुनिश्री ने 8 नवम्बर, 2010 को मधुवन जैन मंदिर के लिये विहार किया।

सिद्ध चक्र महामण्डल विधान की प्रभावना

गुलाबी नगर जयपुर के दक्षिणांचल में कुशल शिल्पियों के अथक प्रयास द्वारा लाल पाषाण से निर्मित जिनालय का निर्माण हुआ है, जो आज वास्तुकला के बजोड़ नमूने के रूप में सुविख्यात है । यहाँ देवाधिदेव 1008 श्री शांतिनाथ भगवान की अति मनोज्ञ दर्शनीय मनहर एवं अतिशयकारी सवा सात फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा विराजमान है । मूलवेदी के दोनों और अष्टधातु से निर्मित सवा पांच फुट ऊँची 1008 श्री आदिनाथ भरत बाहुबली भगवान एवं पंचबालयाति तीर्थंकारों की प्रतिमाएं विराजमान हैं।

यहाँ के श्रावकगणों की सदैव ही जैन दिगम्बर गुरुओं के दर्शन एवं सान्निध्य पाने की मंगल कामना रहती है। दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 विद्यासागर महाराज के परम शिष्य मुनिराज 108 श्री आर्जवसागर जी महाराज साथ में क्षु. हर्षितसागर जी महाराज आत्मकल्याण में लीन रहते हैं, श्रावकों की प्रार्थना पर करुणाकर अपनी अमृतमयी वाणी वर्षा कर उनका कल्याण करते हैं। ऐसे गुरु का सानिध्य पाने के लिए मालवीय नगर के भक्तगण पिछले दो वर्षों से प्रयासरत्, लालायित एवं प्रतीक्षारत थे। हमारे

परम पुण्योदय से हमारे निवेदन एवं हमारी पुकार सुनकर गुरुवर ने शनिवार, 13 नबम्वर 2010 को प्रातः काल की मंगल बेला में हमारी इस सुंदर नगरी में ससंघ भव्य जुलूस के साथ मंगल प्रवेश किया। जिनदेव के दर्शनोपरांत प्रवचन सभा में सभी श्रावकों ने विनय पूर्वक आपके सानिध्य में अष्टाह्निका महापर्व में सिद्धशिला पर विराजमान अनन्तसिद्धों की पूजा अर्चना करने एवं आचार्य श्री 108 श्री विद्यासागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण समारोह मनाने के लिए करबद्ध प्रार्थना की। स्वीकृति प्राप्त होते ही सभी श्रावक, कार्यकर्ता एवं ट्रस्टीगण तुरन्त भाव सह इस मंगल कार्य को संपन्न करने में जुट गए। श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम, इन्दौर के अधिष्ठाता ब्रह्मचारी श्री अनिल भैया ने विधानाचार्य एवं ब्रह्मचारी श्री विमल भैया ने सहप्रतिष्ठाचार्य का पदभार सम्हाला। 4 नवम्बर को प्रातः मंगल बेला में श्रीमति हीरामणी पाण्डया के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ श्री 1008 सिद्ध चक्रमहामण्डल आराधना महोत्सव प्रारंभ हुआ। पूजन मंडल एवं हवन की समस्त सामग्री का व्यय भार श्रीमति लक्ष्मी देवी पाण्डया की प्रेरणा से श्री निहालचंद नवीनचन्द पाण्डया ने स्वीकार किया। विधानमण्डल पर मंगल कलश स्थापित किये गये। मंगलदीप प्रज्ज्वलन किया गया। आठ दिन के सौधर्म इन्द्र क्रमशः श्री सन्मति जैन, श्री मुकेश जैन, श्री महेन्द्र जैन, श्री उत्तमचन्द जैन, श्री महेन्द्र कुमार शाह, डॉ. विनीत साहूजा, डॉ. डी. आर. जैन, एवं श्री सौभागमल बड़जात्या बने। आठ दिन पूजार्थियों के लिए शुद्ध भोजन की व्यवस्था, क्रमशः डॉ. चमन जैन, श्री महीपाल जैन, श्री सुभाष जैन, श्री नीरज जैन, श्रीमति मैना देवी लुहाड़िया, श्री प्रेमचंद बैनाड़ा, श्री निहालचंद पाण्डया, श्रीमति मंजु जैन ने की। संगीतकार शानु ने संगीत की लहरों पर भक्ति भाव से पूजन कराने के साथ ही प्रतिदिन सायंकालीन आरती गुरुभक्ति के उपरांत प्रथमानुयोग पर आधारित कहानियों पर नाटिकाओं का प्रदर्शन किया।

गुरुवर से श्रावक-श्राविकाओं ने नित्यप्रति प्रातःकालीन प्रवचन में कल्याणकारी उपदेश सुना। दोपहर में अपनी शंकाओं का समाधान पाया। वहीं छोटे - छोटे बालकों ने अपना पाठशाला संस्कार पाया। गुरुवर का बालकों पर अपार वात्सल्य रहा। जयपुर के बाहर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आसाम, तमिलनाडु आदि कई प्रदेशों से भी श्रावकों को आने का क्रम निरंतर बना रहा ।

गुरुवर ने अपने कर कमलों से श्रावक-श्राविकाओं को जिनवाणी प्रदत्त की। वहीं इस अवसर पर भोपाल से भावविज्ञान पत्रिका के सहसंपादक इंजीनियर श्री महेन्द्रकुमार जैन पधारे ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सी. एल. जैन एवं उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जैन ने पत्रिका का विमोचन किया। सोमवार, 22 नवम्बर 2010 को प्रातः 11 बजे आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज का 39वां आचार्य पदारोहण समारोह प्रारम्भ हुआ। इसमें जयपुर के श्रेष्ठीगण श्री गणेश राणा, श्री उत्तम कुमार सरावगी, श्री कुंथीलाल रावरो, श्री प्रकाश अजमेरा, महेश चंद चांदवाड, श्री हरक चन्द छावड़ा एवं पदमपुरा अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सम्पत कुमार पाण्डया पधारे। आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतिव्य पर श्री निहालचंद पाण्डया, श्रीमति सुलोचना जैन, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सी. एल. जैन, डॉ. श्री शीतल चंद जैन, पं. श्री

चन्दनमल जैन अजमेरा, पं. श्री मूलचन्द लुहाड़िया किशनगढ़, डॉ. पी. सी. जैन ने प्रकाश डाला। अन्त में मुनिराज श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के उद्बोधन ने सारे श्रोताओं को आचार्य श्री की साक्षात् उपस्थिति का आभास करा कर भाव विभोर कर दिया ।

समारोह का समापन वात्सल्य सामूहिक भोजन के साथ हुआ जिसमें श्रेष्ठी श्री महिपाल बाकलीवाल का विशेष, आर्थिक सहयोग रहा। मुनिसंघ ने 25 नवम्बर को सायँ शहर की ओर विहार कर 26 नवम्बर प्रातः श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सांगाकान में वेदी प्रतिष्ठा व आशीर्वाद हेतु एवं मंगल प्रवेश किया।

इस तरह अल्पकाल में ही गुरुवर की प्रेरणा से मालवीय नगर की धरती पर एक मंगल उत्सव सम्पन्न हो गया । जिसकी महकी - महकी सुगंध आज भी यहाँ के वातावरण में महक रही है।

अध्यक्ष : सी.एल. जैन, मालवीय नगर, भोपाल

श्री दिगम्बर जैन मंदिर सांगाकान के निमित्त जयपुर में अभूतपूर्व पंचकल्याणक महामण्डल विधान एवं भव्य जिनेन्द्र रथ शोभायात्रा

गुरुदेव परम पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में दिनांक 27 व 28 नवम्बर 2010 को सांगाकान दिगम्बर जैन मंदिर, महावीर पार्क, चौकड़ी मोदीखाना, जयपुर में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामण्डल अराधना वेदी प्रतिष्ठा एवं शिखर कलशारोहण समारोह बड़े उल्लासपूर्वक मनाया गया।

दिनांक 25 नवम्बर को जब विगत तीन दिनों से लगातार वर्षा की झड़ी लगी हुई थी, उस समय जैन समाज चिन्ता की स्थिति में था । समारोह कैसे सम्पन्न होगा? महाराज श्री ने जनसमुदाय को आशीर्वाद दिया कि सब ठीक हो जायेगा । आश्चर्य की बात, महाराज श्री जैसे ही विहार के लिए मालवीय नगर सेक्टर 3 के लाल जैन मंदिर से बाहर आये। बारिश स्वतः रुक गई और जैसे ही महाराज श्री विहार कर थोड़ा आगे आये धूप की किरणें खिलखिलाकर चमक पड़ी। जनता ऐसी धर्म प्रभावना देखकर भाव विभोर हो गई। जैन धर्म की जयकार लगाने लगी।

सुबह दिनांक 26 नवम्बर को जब महाराज श्री ने शहर चौकड़ी, मोदीखाना में विशाल जुलूस के रूप में प्रवेश किया तब स्त्री पुरुष बालक नाचते, गाते, झूमते, जयकारे लगाते हुए बैण्ड बाजे के साथ आगे बढ़ रहे थे । चौकड़ी के तमाम मंदिरों, 25 जिनालयों एवं घरों के आगे महाराज श्री के पाद प्रक्षालन किये गये, आरती उतारी गई।

दिनांक 27 नवम्बर को महावीर पार्क स्थित पाण्डाल में समाज श्रेष्ठी श्री देवप्रकाश जी खण्डाका ने ध्वजारोहण एवं श्रेष्ठी श्री हंसराजजी जैन मारूजीवालों ने दीप प्रज्ज्वलित कर महामण्डल की

शुरूआत की। तत्पश्चात् विशाल जल यात्रा शहर में घूमी व बहुत अच्छी धर्म प्रभावना की। पुण्यार्जक श्रीमान अरुण जी काला के सहयोग से आयोजित सामूहिक भोज का उपस्थित जन समुदाय ने आनंद लिया। दोपहर में साजगाज व भक्तिभाव से पूजा की गई। रात्रि में राष्ट्रकवि चन्द्रसेन जी के सानिध्य में विशिष्ट कवियों के साथ विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.11.2010 को सुबह महाराज श्री के प्रवचन के पश्चात् महापौर श्रीमति ज्योति खण्डेलवाल ने अपने जीवन को अहिंसामयी बनाने का संकल्प किया। उनके साथ भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्रीमान अरुण चतुर्वेदी व स्थानीय पार्षद अनिल बम्बजी भी समारोह में उपस्थित रहे। तत्पश्चात् 1 हाथी, 4 घोड़े, 2 बैण्ड, 16 बग्गी के साथ भव्य जुलूस का निर्माण किया गया और शहर भर में धूमधाम पूर्वक धर्म प्रभावना की गई।

जिनेश भैया जबलपुर, अधिष्ठाता, वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल के सानिध्य में 9 स्वर्णमयी वेदियों में जिन मूर्तियों को विराजमान किया गया। रत्नमयी मूर्तियों को नवनिर्मित वेदियों में सुरक्षात्मक तरीके से विराजमान किया गया। उक्त समारोह में अरुणजी शाह सौधर्म इन्द्र, सुनील जी सोनी जौहरी कुबेर, प्रेमचन्द जी छाबड़ा यज्ञनायक, प्रदीप जी जैन माहेन्द्र इन्द्र इत्यादि 16 प्रमुख इन्द्रों ने विशिष्ठ पुण्यार्जन किया। कार्यक्रम के अन्त में मंदिर कमेटी द्वारा मुनिसंघ को शीतकालीन प्रवास के लिए निवेदन किया गया।

इस शीतकालीन प्रवास में मुनि श्री से कमेटी के सभी सदस्य सुबह स्वाध्याय एवं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मुनि श्री द्वारा आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला भी प्रारम्भ की गई है। हमारे परिसर में स्थित 25-30 मंदिर एवं चैत्यालयों के सारे जैन बच्चे इस धार्मिक पाठशाला में उपस्थित होकर जैन धर्म की शिक्षा हेतु जैन धर्म के आठ नियमों को गुरुदेव से लेकर धन्य हो गये हैं। सभी परिवारों में उत्साह एवं उमंग का वातावरण हो गया है। जगह-जगह से गुरुदेव के प्रवास हेतु निवेदन आने के पश्चात् भी यहाँ के लोग मुनि श्री के चरणों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। 30 वर्ष बाद इतनी उत्कृष्ट प्रभावना का अवसर मिला है। समाज का ऐसा मानना है कि ऐसा सौभाग्य पुनः मिलना दुर्लभ है।

गुरु ने सन्मार्ग दिखाया, सबका मिथ्यातिमिर हटाया।
गुरु न आते अगर, कौन लेता खबर।।
गुरुवर हैं सबके प्यारे रहते हैं जग से न्यारे।
गुरु मिटाते हैं गम सारे, गुरु शत्-शत् नमन हमारे।।

- पारस सौगानी, जयपुर- राज.

अनावश्यक हिंसा से बचिये

शाकाहारी वही है जो मांस, मछली व अण्डे नहीं खाता। शराब व दूसरी नशीली चीजों का सेवन नहीं करता है। यह सब जीवों की प्राणों की रक्षा करता है। वही पृथ्वी से उत्पन्न फल साग-सब्जी व दूध मक्खन खाकर जीता है। सभी धर्मों की यही आज्ञा है। किसी के प्राणों को पीड़ा देना अच्छा नहीं बल्कि दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिये उतना ही सावधान होना चाहिए जितना कि प्राणी अपने प्राणों की रक्षा चाहता है।

1. **साबुन और शेम्पू** - सिन्थोल, न्यू सिन्थोल, क्राउन, ग्लोरी, मार्बल, विजिल (गोदरेज), हमाम (टाटा), नीको (पार्कडेविस), मैसूर सेन्दल, जेस्मिन संसार (बैंगलोर), चन्द्रिका, कुटीर, शेम्पू, लेमन, लक्जरी, शिकाकाई (ल्योर), लेमन शेम्पू (सन)।
2. टूथ पाउडर व पेस्ट - टूथ पाउडर (प्रोमिस, जैमिनी, निहारिका, प्राईड, राज-राजेश्वरी, वीना शिवानन्द, फोरहन्स, जैनसन, वीको वज्रदन्ती, लाल, काला, सफेद दन्त मंजन (वैद्यनाथ), लाल मंजन (अमर), दन्त मंजन (झण्डू), धवल दन्त (झण्डू), टूथ पेस्ट (क्रिस्टल, मोती, वीको वज्रदन्ती, प्रोमिस, बबूल)।
3. पाउडर- वेलकम पाउडर (लेवेन्डर, रोज, खस, नीविया, लक्मे, टिआरा, सम्राट), पाउडर (निखार, हेमा), केश पाउडर (वृन्दा शालीमार, भागीरथी, भारत लक्मे, सीको) मेडिकेटेड पाउडर (नाइसिल), टामतेल पाउडर (सन्थोल फेसिका)।
4. हेयर पिपरेशन - आवंला तेल, वाहनी तेल, ब्राम्ही आमला तेल (बैद्यनाथ झण्डू), महाभृंगराज केश तेल, हिमानी कल्याण तेल, केशरी हेयर आईल, हर्बल हेयर टानिक (क्राउन), हेयर डाइज (फरिश्ता, पीकाक, सीजर्स, गोदरेज, हेयर टानिक पावडर) (मुकेश्वरी) हेयर क्रीम (गोदरेज)।
5. क्रीम और लोशन - ब्यूटी क्रीम (सुन्दर), हर्बल मसाज क्रीम (क्राउन), सेन्दलवुड आइल (मैसूर), स्नो वेसलीन (हेमा), क्रीम (टिआरा, लक्ष्मी, विशाल, हर्बल, पिम्पल क्रीम) (क्राउन), स्किन क्रीम (निबिया), बेनोलिग कोल्ड क्रीम (लक्मे), हरमेरिक वेनिशिंग क्रीम (वीको), क्लींजिंग मिल्क (लक्मे)।
6. आई मेकअप - आई लाइनर, मेस्कारा (लक्मे), काजल (सोनिया श्रीमती), काजल (संजोग।)
7. अन्य - शेविंग राण्ड (गोदरेज), शेविंग स्टिक (गोदरेज), आफ्टर शेव लोशन (कन्स्रर्ट, लक्मे सन), शेविंग क्रीम (गोदरेज, लक्मे, मिनार्क), लिपिस्टिक (लक्मे), स्टिकर बिन्दी (शिल्पा)। अण्डा च चांदी के वर्क भी शाकाहारी नहीं है।

उपरोक्त चीजों में जीव हिंसा नहीं होती। पहले पदार्थ का नाम, ब्रेकिट में ब्राण्ड का नाम है।

कई एलोपैथी दवाईयां हिंसक, क्रूर, बर्बर होती हैं जो जीवों को मारकर बनती हैं अभक्ष्य हैं न खायें। दूसरी दवा जो इनका विकल्प है, ठीक है वो खायें। विटामिन A और B टानिक ज्यादातर मछली के लिवर से निकाले जाते हैं। डायबिटीज मधुमेह की इन्सुलिन औषधी (Injection) अभक्ष्य है। लोह तत्व के

टानिकों के कईयों में सीधे ही पशुओं का खून डाला जाता है। इन सबके विकल्प हैं कृपया ध्यान से ठीक दवा ही लें। विटामिन A के मांसाहारी स्रोत हैं - गोमांस, लिव्हर, गुर्दा, अण्डा। शाकाहारी स्त्रोत हैं - पालक, फूलगोभी, बन्दगोभी, कच्ची गाजर, अनाज, दूध, खुरयानी, चेरी, तरबूज, आडू, खरबूज। शाकाहारी भोजन अनाज दाल साग सब्जियों में सभी विटामिन होते हैं। विटामिन डी धूप से आसानी से पाया जा सकता है।

चंद अभक्ष्य ऐलोपैथिक दवायें

ये दवायें अभक्ष्य हैं नहीं लें। | **वही गुण है इन दवाओं को ले सकते हैं।**

ट्रेड नेम (व्यापारिक नाम)	इन्ग्रेडिएंट (संघटक)	रोग उपयोग	विकल्प (आल्टर्नेटिव) ठीक है
1. एल्वीजाइम (टेब्लेट)	पैंक्रिएटिन	पीलिया	लिवोर्ब (लिक्विड)
2. फेस्टाल	पैक्रिएटिन	यकृत-निष्क्रियता	स्टिमुलिव (लि.)
3. रिपोसीन	लिव्हर एक्स्ट्रेक्ट	यकृत-निष्क्रियता	सोर्बीलिन (लि.)
4 पैंक्रियोफ्लेट	लिव्हर एक्स्ट्रेक्ट	यकृत-निष्क्रियता	हेपासल्फोल, सिनेथिओनिन
5 मर्केन्जाइम	पैंक्रिएटिन	यकृत-निष्क्रियता	सिनेथिओनिन
6 बायर्स टॉनिक, लिवोजिन	लिव्हर फ्रेक्शन	भूख कम होने पर	हेमीफोस, सिप्लेटिन
7 जे. पी. टोन	लिव्हर एक्स्ट्रेक्ट	भूख कम होने पर	केनीटोन
8 सिक्सेप	लिव्हर फ्रेक्शन	भूख कम होने पर	वीटाहेक्स्ट या रेनबेक्सीज टॉनिक
9 डेक्सोरेंज (सीरप) हेम्फर (सीरप)	हीमोग्लोबिन	एनीमिया (खून की कमी)	फेसोविट (एलीक्झिर), फोलीनेट, नोरी-एकोट, फास्फो, मिनिआयर्न गोलियां, (एलीक्झर)
10 फेरोचिलेट	डेसीकेटेड लिव्हर (अवशोषित यकृत)	-	न्यूरो फास्फेट (सीरप)
11 हिपेटोलोबिन (सीरप)	लिव्हर यकृत हीमोग्लोबिन	-	प्रोबोफैक्स (सीरप/कैप.) रैरीकेप (गोलियां)
15 आयबेरोल (गोलियाँ)	-	-	रुब्राफेक्स (एलीक्झिर)
16 लीवीब्रोन	लिवर कोन	-	टोनोफेरोन (सीरप)
17 लिवोजिन (कैप.)	-	-	वीटोफेरिन (कैप्सुल)
18 प्लास्टूल्स-बी	-	-	हेपासूल्स (कैप्सुल) हेमेट्रिन (कैप्सुल) माइक्रोसुल (कैप्सुल) नियो-फेरीलेक्स (कैप.)

19 न्यूरोट्रट (कैप.)	लिवरकोन	–	–
20 सिल्वेट	डेसीकेटेड लिवर + वि.ए.	–	–
21 शार्कोमाल्ट	शार्क मछली का लिव्हर	–	–
22. एड्रिनेलिन	बोंकिथल	अस्थमा (दमा)	पशुओं की ग्रन्थिओं से
23. Surbex-T	ताकत कैप्सुल में मछली का तेल		

विटामिन डी के मांसाहारी स्त्रोत हैं – मछलियाँ, कोड मछली का लिवर, हेलीवेट का लिव्हर, सामान और तुना मछलियाँ, अण्डे का योक। जिन एलोपैथिक अंग्रेजी दवाईयों में ये होता है – अभक्ष्य हैं ये हैं – एब्डेक ड्रॉप्स, एडीप्लोन 12, एक्वेसोल, आरोचिटोल, बीट्रिआन, केल्सिरोल, केरो फ्रेल, सिल्वेट, एल्प्रोविटड्रॉप्स, एडीनाल, होवाइट ड्रॉप्स, मेनाडोल, मिटामिन, मल्टी बायोटा, मल्टीविटाप्लेकस फोर्ट, रोवीगोन, स्कलेरोबिओन, थार्कोविट, थेराग्रान, यूनीविटो, वाइडेलिन, वाइमेग्ना, वाइसिनिरोल। ओवलटीन केक, मेवोनीज सॉस (चटनी) में अण्डा

अनाज, दालों, साग सब्जियों में सभी विटामिन, ताकत है फिर क्यों व्यर्थ में जीवों के कत्ल के भागी बनते हैं।

विटामिन A – हरी सब्जियों, गाजर, टमाटर, मूली के पत्तों आदि में पाया जाता है।
विटामिन B – हरी पत्तेदार सब्जियों व अनाज में पाया जाता है।
विटामिन C – हरी सब्जियों, नींबू, अमरूद, आंवला, सन्तरा, मौसम्मी आदि में पाया जाता है।
विटामिन D – सबसे अच्छा स्त्रोत सूर्य की किरणें हैं।
विटामिन E – घी, मक्खन इत्यादि में खूब होता है।
विटामिन K – हरी सब्जियों में पाया जाता है।

इस प्रकार सभी विटामिन जो स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है शाकाहारी पदार्थों व सूर्य की किरणों से प्राप्त होते हैं।

हिंसा से निर्मित चन्द होम्योपैथिक दवाईयाँ (अभक्ष्य)

चिकित्सा के नाम पर जीव हिंसा उचित नहीं

सीपिया – मछली से। **व्यूको** – चिड़ियों को पकड़ लेने वाले मेढ़क के विष से। **मास्कस** – कस्तूरी से जो जिंदा हिरण को मारकर प्राप्त करते हैं। **कार्बोहाइनिमेलिस** – बैल जैसे पशु के कोपले से। **क्रोटेलस हरिडस** – सर्प के विष से। **टरन्टुलाहि स्पैनिया** – स्पेन एवं दक्षिण अमेरिका में पाई जाने वाली मकड़ी से। **नेजाट्रिप्युडियन्स** – कोबरा सर्प के विष से। **पाइरोजे नियम** – सड़े हुए गोमाँस के रस से। **लैकेसिस** – सर्प विष (अमरीका)। **बैरिओलिरम व वैक्सिनिनम** – चेचक के मवाद से। **सोरिनम** – खुजली के छालों के विष से। **साईमेक्स** – खटमलों को पीसकर – तीव्र सिर दर्द में। **पुलेक्स टूटीटण्टूस** – मक्खी से – चेहरे की झुरियां – घाव पकने पर , विषैले सामान्य फोड़ों के दर्द में।

तारेन्हीटा – मकड़ी से – हिस्टीरिया (मिर्गी) पक्षाघात के लिए। **थेरेण्ड** – मक्खी से – माहवारी के पूर्व कब्ज को दूर करने के लिए। Ovaum अंडे की ताजा झिल्ली से। Ovi Gallinae Pellicula एक दम कमर दर्द – बायें सीने का दर्द । Scilla सिल्ला – खूब गूदा भरे ताजे सामुद्रिक प्याज की गांठ से। Scorpio Europeaus स्कारपियो यूरोपेइअस – जीवित जन्तु को कुचलकर लू अर्क । Sepia सीपिया – सुखाई हुई सीपियों के विचूर्ण। Spongia Tosta स्पोंजिया टोस्टा – तुर्की स्पंज को तवे पर लाल भूनकर मूल अर्क। Tarentula Cubensis टेरेण्टुला क्यूबेनसिस – जीवित क्यूबा मकड़ों को पीसकर। Tarentula Hispania टेरेण्टुला हिस्पानिया – जीवित स्पेन मकड़ों से मूल अर्क अवचूर्ण। Theridion थेरिडियोन Ceevvassacicum औरेंज जीवित मकड़ों को कुचल कर मूल अर्क सिर दर्द खास दर्द सीने दिल के पास। Thrombidium Muscal Domesticea थ्राम्बीडियम मस्कल डोमेस्टिकै–जीवित कीड़ों के साथ पचास प्रतिशत अल्कोहल मिलाकर मूल अर्क। Vaccininum Nosode वैक्सीनीनम – स्वस्थ बछिया से दाफड़ की बीमारी। Vespa crabo Wasp जीवित बर्रो को पांच गुना अल्कोहल डालकर सड़ाने पर। Vipera Berus वाइपेरा बेरस – इसके जहर से विचूर्ण बनते हैं – किडनी। Valpis Hepar वलीपस हीपर Fox Liver लोमड़ी के सुखाये जिगर से विचूर्ण। Vulpis Pulmo - Fox Lung (वलीपस पल्मो) लोमड़ी के सुखाये हुए फेफड़े का मूल अर्क। **पाइरोजेनियम** – सड़े हुए गोमांस के रस से। **ऐसिड लैक्टिकम** – मठा या दही में एल्कोहल मिलाने से। **ऐगरिकस मस्केरियस** – फंगस, कुकुरमुत्ता से। **ऐम्ब्रा ग्रिसिया** – तिमि मछली की आँत और विष्ठा से। **ऐगरिकस फैलॉयडेस** – दूसरी जाति के कुकुर मुत्ते या फंगस से। **अर्सेनिफस ऐल्बम** – संखिया विष से। **बैडियागा** – यूरोप के जलाशयों से उत्पन्न स्पंज से। **ब्यूफोराना** – टोड जाति के मेंढक के चमड़ेकी ग्रन्थि से निकले जहर से। **कैस्टोरियम** – बीवर नामक जन्तु की योनि से। **कोनियम मैकुलेटम** – हेमलॉक नामक जहर से। **डिफ्थेरिनम** – डिफ्थीरिया के विष से। **कुरारि** – अमेरिका के कुरारि विष से। **इलैप्स कोरालिनस** – ब्राजील देश के विषधर सर्प के विष से। **फेल टीरी** – सांड के ताजा पित्त से। **लेक्ट्रोडेक्टस हैसल्टी** – काले रंग के मकड़े से। **लेसिथिन** – अण्डे के पीले भाग से। **म्यूरेक्स परप्यूरिया** – भूमध्यसागर के शाम्बूक (घोंघा) की गर्दन के रंगीन भाग से। **क्वासिया** – कृमि (कीड़ों) से। **सिफिलिनम** – उपदंश के जख्म के विष से। **टियुबर्क्युलिनम** – यक्ष्मा रोगी के फेफड़े की जख्म के जीव से। **वाइपेरा** – जर्मनी के साँप के विष से। **वोटोलस होरी** – सांपों को मारकर।

होम्योपैथी में गम्भीर रक्तस्राव, गर्भाशय कैंसर, सिरदर्द, डिप्थेरिया, लेरिंजाइटिस व पेरीटोनाइटिस में सांपों से निर्मित दवाएं दी जाती हैं। सांपों से अनेक प्रकार की और भी दवा दी जाती हैं। होम्योपैथिक में विशेष तौर पर ये दवा जीवों को मारकर बनती है। सभी दवायें ऐसी नहीं हैं। देखकर पूछ कर लें । अतः अहिंसा प्रेमी दवाई छानबीन करके लें। अज्ञानवश हिंसा में सहभागी न बनें।

साभार : 1994 में प्रकाशित शाकाहार पुस्तक

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, एफ 108/34, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

श्रीमती सीमा जैन पत्नि श्री जिनेन्द्र जैन

सी-103, हरिमार्ग, जे.डी.ए. कालोनी

मालवीय नगर,जयपुर-302017

द्वितीय श्रेणी

श्रीमती चमनदेवी पत्नि श्री महेन्द्र जैन

5006, रावली हॉट, रेवाडी

हरियाणा - 123401

तृतीय श्रेणी

श्री सुरेश चन्द्र जैन

के एम-22, कवि नगर

गाजियाबाद (उ.प्र.) 201002

उत्तर पुस्तिका - सितम्बर 2010

प्र.क्र. 1 भ. पार्श्वनाथ 2. महामांडलिक 3. नेमिनाथ 4. श्री अमरचंद जी

5. हाँ 6. नहीं 7. हाँ 8. हाँ

9. सोलहकारणव्रत से 10. आठ 11. पच्चीस

12. वर्षा से भूमि व वातावरण में जीव राशि अत्याधिक बढ़ जाती है अत: विहार से होने वाली हिंसा को बचाने हेतु एवं स्वाध्याय, ध्यान व उपवासादिक तप वृद्धि हेतु साधु लोग वर्षायोग एक स्थान पर करते हैं ।

13. 108 14. चतुर्थकाल 15. नोकर्म आहार

16. 18000 17. सही 18. सही

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन अंक 100

- ❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- ❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 तीन और दो कल्याणक वाले भी तीर्थंकर होते हैं -
भरत क्षेत्र में [ ] ऐरावत क्षेत्र में [ ] विदेह क्षेत्र में [ ] मनुष्य क्षेत्र में [ ]

प्र. 2 भगवान महावीर के प्रधान गणधर थे -
इन्द्रभूति गौतम [ ] गौतम ब्राह्मण [ ] भद्रबाहु स्वामी [ ] गोवर्धनाचार्य [ ]

प्र.3 भगवान महावीर के गृहस्थ जीवन के नाना थे -
राजा श्रेणिक [ ] बिम्बसार [ ] राजा चेटक [ ]

प्र. 4 भगवान महावीर के गृहस्थ जीवन की माँ त्रिशला की अन्य बहनें थीं -
छह [ ] सात [ ] ग्यारह [ ] पाँच [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर के समवसरण में 60 हजार प्रश्न किये थे ? [ ]

प्र.6 इन्द्रभूति ब्राह्मण वर्ण से दिगम्बर मुनि बने थे ? [ ]

प्र.7 राजा श्रेणिक विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बनेंगे? [ ]

प्र.8 प्रियकारिणी यह माँ त्रिशला का अपरनाम था ? [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 सम्यग्ज्ञान के ....अंग होते हैं।
[चौदह, चार, आठ]

प्र.10 दसवें पूर्व का नाम ....है।
[दृष्टिवाद, विद्यानुप्रवाद, कल्याणनाधेय]

प्र.11 विहार के समय तीर्थंकर प्रभु के चरणों के नीचे देव ....कमलों की रचना करते हैं।

[16, 225, 108, 1008]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12 पटाखे फोड़ने व जलाने से क्या – क्या हानियाँ हैं।

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13 द्वादशाङ्ग में अंग	72
प्र.14 द्वादशाङ्ग में पूर्व	30
प्र.15 भगवान महावीर के समवसरण विहार वर्ष संख्या	14
प्र.16 भगवान महावीर की पूर्ण आयु वर्ष	12

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17 हमारे गणेश गणधर परमेष्ठी व लक्ष्मी अनंत चतुष्टय हैं। [ ]

प्र.18 भगवान महावीर के समवसरण का विस्तार बारह योजन था। [ ]

प्र.19 भगवान महावीर बालब्रह्मचारी थे। [ ]

प्र.20 तीर्थंकर महावीर की मौसी चेलना के पति राजा श्रेणिक का राज्य राजगृही में था। [ ]

प्रतियोगी-परिचय

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता...

....

मोबाईल/फोन नं. ....

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

दानवीर, किशनगढ़

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳✳ सम्मानीय संरक्षक ✳✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, पूर्व अध्यक्ष जैन समाज, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र प्राचीन बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर ● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छावड़ा, जयपुर

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

गुना

श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, लक्तपुरावाले
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया
अध्यक्ष, चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई वाले
श्री अनुज कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़ वाले
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा वाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा जैन ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला डोइया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला, श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छावड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सौगानी
श्रीमती अरूणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीर प्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांडया
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर वाले
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छावड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी

श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री प्रकाशचंद बिंदकिया
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पंडया
डॉ. विजय काला

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छावड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोषी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन

श्री धर्मचंद छावड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायके
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, देह

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छावड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद जी सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांडया
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांडया
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांडया
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष,श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन

श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
अनुपमा जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी जैन धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य
मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कोषाध्यक्ष नाथूलाल जैन, हंसराज जैन, मारुजी वालों का सम्मान करते हुए

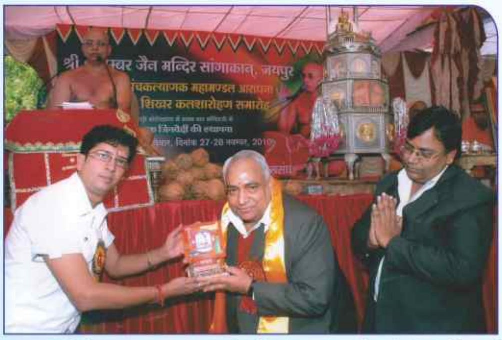

दीपेश छाबड़ा श्री देवप्रकाश खण्डाका एवं सतीश खण्डाका को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

संदीप शाह एवं महावीर कासलीवाल मुनिश्री के नवीन चित्र का अनावरण करते हुए

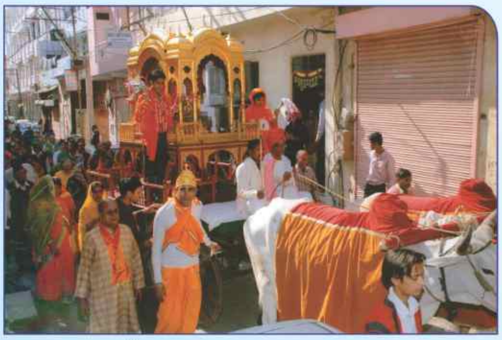

शोभायात्रा का भव्य दृश्य 28.11.2010

प्रोफेसर राजकुमार जैन, प्राइवेट सेकेटरी टू रजिस्ट्रार,
राजस्थान युनिवर्सिटी मुनिश्री से साहित्य प्राप्त करते हुए

प्रोफेसर पी.सी. जैन, विभागाध्यक्ष जैनोलॉजी, राजस्थान
युनिवर्सिटी मुनिश्री से साहित्य प्राप्त करते हुए

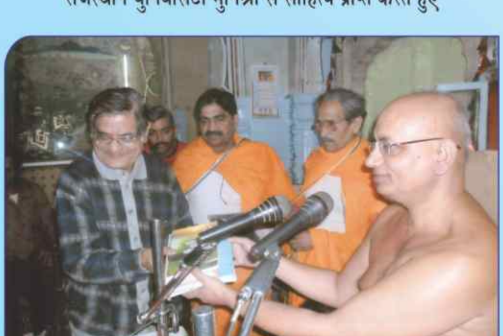

एडवोकेट देवेन्द्र, हाईकोर्ट कलकत्ता मुनिश्री से
साहित्य प्राप्त करते हुए

कीर्ति नगर जैन मंदिर से शोभा यात्रा के समय मुनिश्री
भक्तजनों के साथ

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

वर्षायोग - 2010

अरुण काला एवं पार्षद आशा काला, कीर्तिनगर
समवसरण विधान, राजदरवार के भेष में

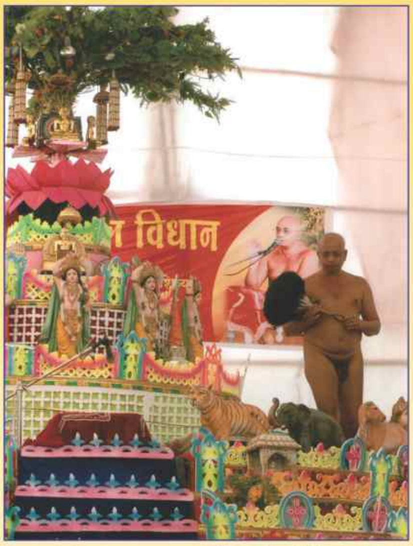

मुनिश्री समवसरण में दर्शन लेते हुए

डी.आर. जैन सपत्नीक, षोडसकारण
का कलश प्राप्त करते हुए कीर्तिनगर

मुनिश्री क्षुल्लक श्री हर्षितसागर जी को नवीन
पिच्छिका प्रदान करते हुए

पुण्यार्जक

सौजन्य से

प्रबंध कारिणी समिति

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर,
कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर (राजस्थान) - 302018

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)